म्यूचुअल फंड

बेहतर निवेश का एक तरीका

महेश भट्ट

म्यूचुअल फंड

निवेश का एक तरीका

महेश भट्ट

सामग्रियाँ

शीर्षक पेज

म्यूच्यूअल फण्ड क्या है

एसआईपी (SIP)क्या हैं

म्यूच्यूअल फंड के प्रकार

डेब्ट म्यूचुअल फंड

म्यूच्यूअल फण्ड क्या है

जैसा की नाम से ही पता लगता है की क्या होता है? यह एक फंड (संग्रह) होता है जिसमे बहुत सारे निवेशकों का पैसा एक साथ पारस्परिक रूप से रखा जाता है धन के इस समूह को सबसे अधिक संभव मुनाफा अर्जित करने के लिए manage किया जाता है. बहुत सारे लोगों के पैसे से बना हुआ फण्ड होता है. जिसमे लगाया गया पैसे अलग अलग जगहों पर निवेश करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है और कोशिश की जाती है की निवेशक को उसकी रकम से ज्यादा से ज्यादा मुनाफा दिया जाए. Fund को प्रबंधित करने का काम एक पेशेवर व्यक्ति द्वारा किया जाता है जिसको पेशेवर फंड मैनेजर (Professional Fund Manager) कहा जाता है. Fund Manager का काम म्यूच्यूअल फण्ड की देख रेख करना व फण्ड के पैसे को सही जगह पर लगा कर अधिक मुनाफा कराना होता है. अगर आसान शब्दों में कहें तो इसका काम लोगो के लगाये गए पैसो को मुनाफे में बदलना होता है. सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (SEBI) के अंतर्गत पंजीकृत हैं जो कि भारत में बाजार को नियंत्रित करता है. निवेशकों के पैसो को बाजार में सुरक्षित रखने का कामSEBI के द्वारा किया जाता है. SEBI द्वारा सुनिश्चित किया जाता है की कहीं कोई कंपनी लोगों के साथ धोखा तो नहीं कर रही. म्यूच्युअल फंड (Mutual Funds) भारत में बहुत लंबे समय से मौजूद है पर आज भी लोगों को इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है. शुरूआती समय में लोगों की धारणा थी की Mutual Funds केवल अमीर वर्ग के लिए है. पर ऐसा बिलकुल नहीं है और आज के समय में ये धारणा बदलती हुयी नजर आ रही है. लोगों का रुझान म्यूच्युअल फंड (Mutual Funds) की तरफ बढ़ा है. आज के समय में म्यूच्युअल फंड (Mutual Funds) केवल अमीर वर्ग के लिए नहीं है. पर ऐसा बिलकुल नहीं है और आज के समय में ये धारणा बदलती हुयी नजर आ रही है. लोगों का रुझान म्यूच्युअल फंड (Mutual Funds) की तरफ बढ़ा है. आज के समय में म्यूच्युअल फंड (Mutual Funds) केवल अमीर वर्ग के लिए नहीं है. यूचुअल फंड छोटे निवेशकों को इक्विटी, बॉन्ड और अन्य प्रतिभूतियों के विशेषज्ञों द्वारा प्रबंधित पोर्टफोलियो में भाग लेने का मौका प्रदान करते हैं। इसलिए प्रत्येक निवेशक फंड के लाभ या हानि में आनुपातिक रूप से भागीदार होता है। म्यूचुअल फंड बड़ी संख्या में प्रतिभूतियों में निवेश करते हैं और इनके प्रदर्शन को आमतौर पर इनके द्वारा निवेश के कुल AMU

यानी एसेट अंडर मेनेजमेंट में बदलाव के रूप में ट्रैक किया जाता है। म्युचुअल फण्ड में निवेश से पहले ही दिमाग में "जोखिम" या रिस्क कि बात आती है. यदि आप अपना पूरा पैसा किसी एक कम्पनी में इन्वेस्ट करते है और किसी वजह से वह कम्पनी डूब जाये तो आपका पूरा पैसा डूब जायेगा. म्युचुअल फंड का सबसे बड़ा फ़ायदा यही है कि यहाँ आपके पैसों को विभिन्न कंपनियों में लगाया जाता है. यदि कोई एक कंपनी का पैसा डूब जाये तो दुसरे कम्पनी में लगाये गये पैसों से लाभ आपके नुकसान को कवर कर लेगा.

म्यूचुअल फंड का इतिहास

इन चारो भागो की हम थोड़ी डिटेल में समझने की कोशिश करते है, पहला भाग – 1963 से 1987- UTI की स्थापना और विकासUnit Trust of India (UTI) जो भारत का पहला म्यूच्यूअल फण्ड है, उसकी स्थापना पार्लियामेंट एक्ट के द्वारा वर्ष 1963 में किया गया,UTI द्वारा पहला म्यूच्यूअल फण्ड स्कीम वर्ष 1964 में आया, जिसका नाम था Unit Scheme 1964, इसके बाद 1970 से1980 के बीच UTI ने अलग अलग निवेशको को उनकी जरुरत के हिसाब, काफी सारे दुसरे स्कीम भी शुरू की,जिसमे प्रुख था, Unit Linked Insurance Plan (ULIP),ध्यान देने वाली बात ये है कि UTI के पास म्यूच्यूअल फण्ड निवेशको द्वारा जमा रकम जो 1984 में600 करोड़ थी, वो 1987-88 तक लगभग 10 गुना से भी ज्यादा बढ़कर 6700 करोड़ हो चूका था, दूसरा भाग – 1987 से 1993, – पब्लिक सेक्टर बैंक का म्यूच्यूअल फण्ड में प्रवेश वर्ष 1987 तक भारत में UTI अकेला म्यूच्यूअल फण्ड संसथान , लेकिन इसी साल भारत सरकार ने पब्लिक सेक्टर बैंक को भी म्यूच्यूअल फण्ड स्कीम लाने की अनुमति दी,और इस तरह म्यूच्यूअल फण्ड में अलग अलग बहुत सारे बैंक और संस्थाओ ने म्यूच्यूअल फण्ड स्कीम लाया, जिनमे सबसे प्रमुख बैंक और संस्थाए है – Insurance Corporation of India (LIC)

General Insurance Corporation of India (GIC)

SBI Mutual Fund

Can bank Mutual Fund (Dec 1987),

Punjab National Bank Mutual Fund (Aug 1989)

Indian Bank Mutual Fund (Nov 89)

Bank of India (Jun 1990)

इस तरह 1987 के बाद अलग अलग म्यूच्यूअल फण्ड संस्थाओ के पास निवेशको का कुल जमा 6700 से बढ़कर 1993 तक 47000 करोड़ से ऊपर जा चूका था. तीसरा भाग – 1993 से 2003- MUTUAL FUND का प्राइवेट सेक्टर का प्रवेश वर्ष 1993 में, भारत में म्यूच्यूअल फण्ड का एक नया युग शुरू हुआ,क्योकि इस से पहले सभी म्यूच्यूअल संस्था UTI के UNDER काम कर रहे थे, लेकिन 1993 में भारत में SEBI की स्थपाना हुई, और SEBI की स्थापना के बाद अब सभी संस्थाओ को SEBI के नियमो का पालन करना था, SEBI द्वारा म्यूच्यूअल फण्ड संस्थाओ को ORGANISED तरीके से विकास और नियमन के उद्देश्य से MUTUAL FUND REGULATION 1993 लाया गया, और प्राइवेट सेक्टर के संस्थाओ को भी म्यूच्यूअल फण्ड स्कीम लाने की अनुमति मिल गई, 1993 के इस अधिनयम में दुबारा संशोधन हुआ और बाद में 1996 में MUTUAL FUND REGULATION 1996 आया, अगर म्यूच्यूअल फण्ड संस्थानों के कारोबार की बात करे तो वर्ष 2003 के अंत तक कुल 33 म्यूच्यूअल फण्ड संस्थाए काम कर रही थी, जिनका कारोबार 1 लाख 22 हजार करोड़ से भी ऊपर हो चूका था, चौथा भाग – 2003 के बाद,वर्ष 2003 में UTI को दो भागो में कर दिया गया, एक भाग जो भारत सरकार के UNDER काम कर रही थी, जिसकी कुल राशी लगभग 30 हजार करोड़ थी,और दूसरा भाग SBI, PNB,BOB द्वारा चलाया जा रहा था, जिसकी कुल राशी 76 हजार करोड़ के उपर जा चुकी थी, और इस तरह म्यूच्यूअल फण्ड संस्थाओ द्वारा किये जाने वाले प्रमोशन और जागरूकता कार्यक्रमो से म्यूच्यूअल फण्ड बहुत विकसित हुआ है, और 2015 तक म्यूच्यूअल फण्ड संस्थाओ का कुल कारोबार 10 लाख करोड़ के ऊपर जा चूका है|

म्यूचुअल फंड कैसे काम करता है?

जब छोटे और बड़े निवेशक साथ मिलकर निवेश करते है तब बनता है ‘म्यूचुअल फंड’| इस निधि का प्रबंधन ‘असेट मैनेजमेंट कंपनी’ करती है| फिर आपके लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए ‘फंड मैनेजर्स’ निगरानी से निवेश करते है| असेट मैनेजमेंट कंपनी के ट्रस्टी इस बात का ख्याल रखते है की निवेशकों का धन सुरक्षित रहे| असेट मैनेजमेंट कंपनी आपकी

राशि को स्टॉक्स, बॉन्ड, गोवर्नमेंट सिक्योरिटीज, फिक्स्ड इनकम सिक्योरिटीज और मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करती है| परंतु, स्टॉक्स और बॉन्ड के मूल्य में उतार-चढाव होने के कारण निवेशकों के लिए जोखिम बढ़ने की सम्भावना होती है| इस जोखिम को टालने के लिए वे आपकी राशि को अलग अलग सेक्टर में निवेश करते है, जैसे की फार्मा, ऑइल एंड गैस, आईटी, बैंकिंग, एविएशन, रियल एस्टेट, स्टील, आदि| तो किसी एक सेक्टर में दिक्कत आये तो बाकि सारे सेक्टर उसकी कमी पूरी कर सकते है| 'डेट फंड्स' और 'इक्विटी इन्वेस्टमेंट' का मेल सबसे श्रेष्ठ माना जाता है| इस मेल में इक्विटी के विकास और डेट फंड्स की स्थिरता के आधार पर आपको बेहतर रिटर्न्स प्राप्त होते है| इसी कारण, म्यूचुअल फंड में निवेश करना, शेयर बाज़ार में निवेश करने से कई गुना फायदेमंद और कम जोखिम वाला है| जब आप म्यूचुअल फंड में निवेश करते है तब आपको NAV (नेट असेट वैल्यू) के अनुसार यूनिट्स दिए जाते है| NAV आपके निवेश किये हुए एक यूनिट का प्रतिनिधित्व करता है| आपके संपूर्ण निवेश का मूल्य आपको NAV से गुणा करने पे प्राप्त होता है| म्यूचुअल फंड में निवेश आप दो प्रकार से कर सकते है , लम्प सम और SIP (सिस्टमॅटिक इन्वेस्टमेंट प्लान)| लम्प सम में आप एक साथ बड़ी राशि जमा करते है और SIP में आपने तय किये हुए महीनो तक छोटी छोटी राशि जमा करते है| इस तरह कोई भी म्यूचुअल फंड में आसानी से निवेश कर सकता है| सारे फंड्स का Nifty या Sensex में से कोई एक तय किया हुआ 'बेंचमार्क' होता है| अपने म्यूचुअल फंड्स का परफॉरमेंस जानने के लिए आपको पहले ये जांचना होगा की वे बेंचमार्क के अनुसार कैसे परफॉर्म करते

है| फंड मैनेजर्स बेंचमार्क को एनेलाइज कर के अपने फंड की परफॉरमेंस उससे बेहतर करते है| इस प्रकार जो फंड अपने बेंचमार्क से बेहतर परफॉर्म करे वह फंड अच्छा माना जाता है|

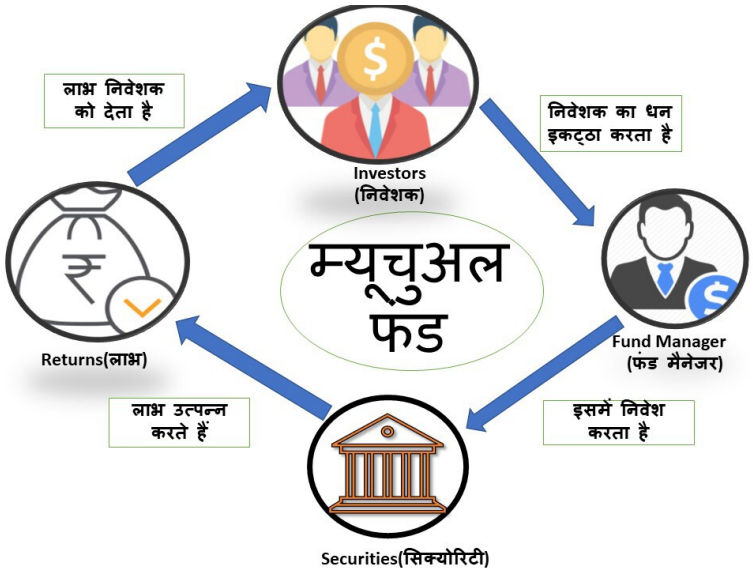

म्यूच्यूअल फंड मैं निवेश के फायदे

प्रत्येक फंड अपने उद्देश के हिसाब से सिक्योरिटी की विभिन्न श्रेणियों में निवेश करता है म्यूच्यूअल फंड विभिन्न ऐसेट क्लास जैसे इक्विटी बांड डिवेंचर कमर्शियल पेपर डेट तथा विभिन्न सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश करता है किसी एसिड में कितना निवेश मिचल फंड द्वारा किया जाता है कमा यह उसकी स्कीम के उद्देश्य पर निर्भर करता है कुछ स्कीम प्रत्येक क्विटी शेयर बाजार में निवेश करती है कुछ फंड स्कीम थोड़ा इक्विटी हुआ थोड़ा डेट में निवेश करती है लेकिन इसकी कोई भी हो म्यूचल फंड में निवेश शेयर बाजार मैं निवेश करने की तुलना में किन कारणों से ज्यादा लाभदायक है यह जानना जरूरी है

म्यूचल फंड में निवेश कई प्रकार से किया जाता है कुछ डायरेक्ट स्कीम होती है कुछ रेगुलर स्कीम कहा जाता है,म्यूचुअल फंड में निवेश करना करना कम रिस्की होता है अगर हम कंपेयर करें शेयर बाजार की तुलना में क्योंकि म्यूचल फंड के फंड मैनेजर निवेशकों से प्राप्त धनराशि को अलग-

अलग ऐसेट क्लास में निवेश करते हैं इससे म्यूचुअल फंड में रिस्क कम हो जाता है,हम म्यूचुअल फंड में निवेश कम राशि से भी कर सकते हैं परंतु शेयर बाजार में निवेश करने के लिए हमें नियमित राशि की जरूरत पड़ेगी|

विविधता (डायवर्सिफिकेशन)

सबसे पहले, म्यूचुअल फंड की सुंदरता यह है कि आप एक फंड में कुछ हजार रुपये का निवेश कर सकते हैं और एक विविध पोर्टफोलियो पहुंच प्राप्त कर सकते हैं। अन्यथा, अपने पोर्टफोलियो में विविधता लाने के लिए, आपको कई फंड को खरीदना पड़ सकता है। यह आपको म्यूचुअल फंड में मिलने वाले जोखिम से अधिक जोखिम में डाल सकता है। उदाहरण के लिए, यदि आपके पास व्यक्तिगत स्टॉक का एक विशिष्ट पोर्टफोलियो है जिसमें 20 से 30 शेयर शामिल हैं, तो यह पोर्टफोलियो लगभग एक म्यूचुअल फंड के रूप में विविध नहीं है जो Nifty ट्रैक करता है, जिसमें 50 शेयर शामिल हैं। दूसरे शब्दों में, एक म्यूचुअल फंड एक निवेशक को कई अलग-अलग शेयरों में सरल और अधिक लागत प्रभावी तरीके से विविधता लाने की अनुमति देता है। कभी-कभी, जब विविधीकरण की बात आती है, तो यह केवल कई अलग-अलग शेयरों के मालिक होने के लिए पर्याप्त नहीं है। उदाहरण के लिए, आप एक म्यूचुअल फंड में 100 स्टॉक के मालिक हो सकते हैं, और वे 100 स्टॉक वित्तीय क्षेत्र (एक सेक्टर म्यूचुअल फंड) में हैं। यह संभावना से अधिक है कि चूंकि वित्तीय क्षेत्र ऊपर और नीचे बढ़ता है, इसलिए आपके म्यूचुअल फंड का मूल्य क्या है। यह हमें दूसरे बिंदु पर लाता है। एक म्यूचुअल फंड विभिन्न शैलियों, क्षेत्रों, देशों के बीच विविधीकरण के लिए अनुमति देता है, और सुरक्षा के किसी भी प्रकार के बारे में आप कल्पना कर सकते हैं। आप या तो एक म्यूचुअल फंड खरीद सकते हैं जो मोटे तौर पर विविधीकृत है, या आप विभिन्न क्षेत्रों में म्यूचुअल फंड का एक पोर्टफोलियो खरीद सकते हैं और अपना स्वयं का विविधीकरण बना सकते हैं।

तरलता (लिक्विडिटी)

म्यूचुअल फंड बहुत सारे निवेश को की पूंजी को एकत्रित कर शेयर बाजार में लगाता है इसलिए शेयर बाजार में ज्यादा लिक्विडिटी का लाभ मिलता है अगर आपने open-ended म्यूचुअल फंड में निवेश किया है और आपको अपना पैसा जल्दी चाहिए तो आप अपने फंड यूनिट को बाजार में म्यूचुअल फंड की यूनिट की कुल संपत्ति मूल के आधार पर बेच सकते हैं उदाहरण के लिए यदि आपने म्यूचुअल फंड की ओपन एंडेड स्कीम में निवेश किया है तब आपको उस फंड की एक यूनिट की कीमत ₹30 पड़ी और तकरीबन 6 महीने बाद आपको पैसों की जरूरत आ गई और अपने यूनिट को बेचने का निर्णय किया तो उस समय आपको यूनिट के बाजार मूल्य के हिसाब से पैसा प्राप्त हो होएगा यदि आपने ₹30 प्रति यूनिट के हिसाब से यूनिट्स खरीदी थी और उसे बेचते वक्त उस फंड की प्रति यूनिट मूल्य (NAV) बढ़ कर ₹40 हो गई, तो आपको लगभग लगभग 30 परसेंट का फायदा यदि आप अपने म्यूचल फंड में किए गए निवेश को 1 साल से पहले निकालते हैं तो उसमें शॉर्ट टर्म कैपिटल गेन टैक्स लगता है जोकि 15 पर्सेंट है यदि आप अपने द्वारा निवेश की गई राशि को एक साल बाद निकालते हैं तो उसमें लोंग टर्म कैपिटल गैन लगता है जो आपके 10% है

अनुभवी व प्रशिक्षित फंड मैनेजर

म्यूचुअल फंड में निवेश करके आप निश्चित हो सकते हैं क्योंकि आप अपने पैसे ऐसे अनुभवी लोगों के हाथ में देते है जो आपके पैसे को बेहतर तरीके से निवेश कर उससे अच्छा रिटर्न देने की कोशिश करते हैं यह उन निवेशकों के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होता है जिनको शेयर बाजार में निवेश करने कि समझ व अनुभव नहीं होता ना ही कोई वित्तीय रूप से इतने मजबूत होता है की वित्तीय सलाहकार की मदद ले सकते हैं ऐसे म्यूचुअल फंड मैं निवेश करके वह घर बैठे शेयर बाजार के अनुभवी खिलाड़ियों का फायदा अपने लाभ के लिए ले सकते हैं इसके अलावा फंड में निवेश उन निवेशकों के लिए लाभदायक है जिनके पास पैसा तो है और समझ भी है लेकिन उनको शेयर बाजार के उतार-चढ़ाव का विश्लेषण करने का समय नहीं है उन्हें भी म्यूचुअल फंड में निवेश का फायदा व सुविधा मिलती है अनुभवी एवं योग्य प्रोफेशनल प्रबंधन की टीम कंपनियों के प्रदर्शन एवं हालत का विश्लेषण करती है और निवेश के लिए उनको चुनती हैं ताकि वह अपने फंड का उद्देश्य पूरा कर सकें

म्यूचुअल फंड NAV (नेट एसेट वैल्यू)क्या है

सीधे सीधे शाब्दिक अर्थ करें तो NAV की फुल फॉर्म है Net Asset Value यानी NAV का अर्थ है कुल संपत्ति का मूल्य. किसी भी म्यूचुअल फण्ड में नेट एसेट वैल्यू , या NAV का मतलब नकदी सहित पोर्टफोलियो के सभी शेयरों के बाजार मूल्य के कुल योग में से देनदारियों को घटाने के बाद बकाया जो भी बचे उसे इकाइयों की कुल संख्या से विभाजित करके प्राप्त किया जाता है.NAV को इस तरह से निकाला जाता है:

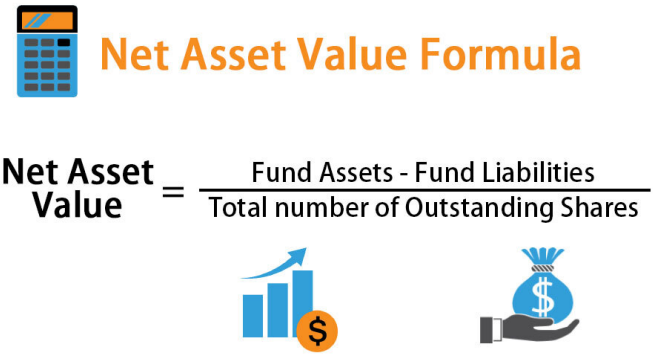

Liabilities - फंड को चलाने के एक दिन के खर्च तथा फंड मैनेजर का एक दिन का वेतन (एक साल के 2 % के करीब होता है।)
Assets - फंड ने निवेश किए हुए पैसो का आज का मूल्य
Total number of Outstanding shares - units की संख्या।
NAV फंड की प्रति यूनिट की कुल परिसंपत्ति मूल्य (खर्चे निकाल कर) है और हर दिन के कारोबार के अंत में उस फण्ड की एसेट मैनेजमेंट कंपनी (एएमसी) द्वारा इसकी गणना की जाती है। किसी भी दिन यदि उस म्यूचुअल फण्ड को समाप्त कर दिया जाए तो उस म्यूचुअल फण्ड में यूनिट धारक को प्रत्येक यूनिट के बदले जो कीमत मिलेगी वही उस यूनिट का उस दिन का NAV होता है. एक तरह से कह सकते हैं कि NAV किसी भी म्यूचुअल फण्ड की यूनिट की Book Value होती है. म्यूचुअल फण्ड में अधिकतर यूनिट की बेस वैल्यू 10 रुपये या 100 रुपये होती है. प्रत्येक कारोबारी दिवस में फण्ड के पोर्टफोलियो के बाजार मूल्य के अनुसार ही यूनिट का NAV घटता बढ़ता रहता है.NAV किसी म्यूचुअल फण्ड के यूनिट के ग्रोथ का परिचायक होता है. यदि आप किसी फण्ड में 12 रुपये प्रति यूनिट एनएवी पर निवेश करते हैं और एक साल बाद यदि उस यूनिट

का एनएवी 15 रुपये प्रति यूनिट हो जाता है तो उस फण्ड ने 25% ग्रोथ की है. यह धारणा गलत है कि कम NAV वाला म्यूचुअल फण्ड अच्छा रिटर्न देगा और ज्यादा NAV वाला फण्ड कम रिटर्न देगा. किसी भी फण्ड के NAV से भूतकाल में फण्ड ने कैसे रिटर्न दिया यह तो बता सकते हैं मगर भविष्य में वह फण्ड कैसा रिटर्न देगा यह एनएवी को देख कर नहीं बताया जा सकता. उदहारण : अगर किसी फंड की NAV 10 रूपए है और आपको 1000 रूपए उस फंड में निवेश करने है।तो आपको मिलने वाली Units = (निवेश की राशि) / (NAV) = 1000 / 10,Units = 100 ,इस तरह आप आपको मिलने वाली Units का पता लगा सकते है।यदि आप पता लगाना चाहते हैं कि आपके द्वारा म्यूचल फंड में निवेश की गई राशि की क्या वैल्यू है

उदाहरण : अगर आपने जिस फंड में निवेश किया है उस फंड की आज की NAV 10 रूपए है और आपके पास उस फंड की 100 Units है,तो आपने निवेश किए हुए 10 हजार रूपए अभी बढ़ के 10 (NAV) x 100 (Number of units) = 1000 हो गए है।इस तरह आप कोई भी Mutual Fund की NAV और Units से अपने किए हुए निवेश की स्थिति जान सकते है।

◆ ◆ ◆

एसआईपी (SIP)क्या हैं

SIP यानी Systematic Investment Plan हिंदी में कहेंगे व्यवस्थित निवेश योजना. मगर मैं इसे क्रमबद्ध निवेश योजना कहना चाहूँगा. SIP जिसे सिप भी कहा जाता है में एक बराबर समय के अंतराल में, एक बराबर राशि एक ही मद में निवेश की जाती है. मान लीजिये की एक निवेशक के पास पचास हजार रुपये है निवेश करने के लिए तो वह इन्हें एक ही दिन निवेश ना करके SIP में पांच हजार प्रति माह के हिसाब से दस माह तक निवेश करते हैं. कम जोखिम में निवेश का एक आसान तरीका जिसमें अपने आप हर महीने एक निश्चित रकम जोड़ कर एक बड़े उद्देश्य के लिए बचत कर के एक मोटी रकम प्राप्त कर सकते हैं. आप चाहे नौकरी पेशा व्यक्ति हों या गृहिणी Systematic Investment Plan में निवेश करके और हर महीने थोड़ा पैसा बचा कर अपने सपनों को पूरा करने लिए एक बड़ी रकम जमा कर सकते हैं. SIP एक ऐसा योजना है जिसमें हर महीने एक निश्चित राशी जमा की जाती है जिससे एक निश्चित समय के बाद निवेशक को एक मुश्त राशी मिल जाती है। जिन्हें Share Market के विषय में अधिक जानकारी नहीं है उनके लिए SIP के द्वारा निवेश करना ही बेहतर तरीका है जिससे निवेशक का जोखिम कम हो जाता है. SIP निवेश एवं बचत की ऐसी पद्धति है जिसके अंतर्गत कोई भी निवेशक एक निश्चित अंतराल में एक निश्चित राशि अपने निर्धारित शेयर अथवा म्यूचुअल फण्ड में निवेश करता रहता है. Gold यानी सोने जैसी कमोडिटी में भी SIP द्वारा निवेश किया जाता है. SIP द्वारा निवेश करने से अनुशासित तरीके से निवेश करना आसान हो जाता है तथा निवेश का जोखिम भी कम हो जाता है. कोई भी निवेशक SIP के द्वारा Share Market, Mutual Fund अथवा Gold ETF में निवेश कर सकता हैं। निवेश का अंतराल प्रति माह रखा जा सकता है। सैलरी पेशा लोगों के लिये यह निवेश का एक आसान उपाय है। हर माह अपनी सैलरी से कुछ बचत करके नियमित और अनुशासित ढंग से बड़ा निवेश किया जा सकता है। SIP रु 500 प्रति माह जैसी छोटी राशि से भी करवाया जा सकता है. आपको एक किस्सा सुनाते हैं जिससे आपको एसआईपी बेहतर तरीके से समझ आयेगा। संतोष और राजेश दो दोस्त हैं. दोनों ने अपनी पत्नियों को वादा किया कि अगली शादी की सालगिरह पर सोने का हार ले कर देंगे. संतोष पूरे साल इंतज़ार करते रहे कि जब सोना सस्ता होगा तब लेंगे. कई बार सोना सस्ता भी हुआ मगर संतोष को लगाता कि सोना अभी

और सस्ता होगा. संतोष हार नहीं ले पाए और सालगिरह पर जो कीमत थी उसी पर हार लेनी पड़ा. राजेश ने पहले महीने से ही गोल्ड ETF में SIP निवेश शुरू कर दिया. जब सोने की कीमत कम हुई या बढ़ी राजेश का निवेश हो जाता था. आप अंदाज लगा सकते हैं की हार की कीमत किसने ज्यादा दी होगी.SIP निवेश का एक बेहतरीन तरीका है.SIP में निवेश के लिये बेहद कम राशि चाहिये होती है। आप ₹500 प्रति माह से भी शुरुआत कर सकते हैं। इस प्रकार छोटा निवेश जेब पर भारी नहीं पड़ता है और लंबी अवधि में यह बड़ी रकम बन सकती है। छोटी राशि निवेश के लिए निकालना आसान होता है. लम्बे समय तक छोटी राशि का निवेश आपको बड़े रिटर्न दे सकता है. सैलेरी पेशा लोग अपनी महीने के बजट से छोटी निवेश इसके जरिये कर सकते हैं। गृहिणियां या छात्र भी कुछ राशि हर माह बचा कर इसमें निवेश कर सकते हैं। शेयर मार्केट में निवेश करने में हमेशा जोखिम जुड़ा रहता है। SIP द्वारा इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश किया जा सकता है। एक नियमित अंतराल में छोटा निवेश, निवेशकों के जोखिम को किसी हद तक कम कर देता है। निवेश से पहले म्यूचुअल फंड के निवेश में जोखिम को जान लें। SIP का सबसे बड़ा फायदा यही है. मान लीजिये किसी निवेशक के पास पचास हजार रुपये शेयर मार्केट में निवेश के लिए हैं. उसने इन्हें बाजार में एक साथ लगा दिया. अगले दिन बाजार ऊपर जाएगा अथवा नीचे कोई नहीं जानता. यही निवेश यदि थोड़े अंतराल में बाँट कर किया जाए तो जोखिम में कमी आ जाती है. SIP में निवेश ऑनलाइन निर्देश दे कर किया जा सकता है। निश्चित तारीख को म्यूचुअल फण्ड आपके खाते से निश्चित राशि लेकर आपके चुने हुए योजना में निवेश कर देता है. इस तरह से हर बार निवेश का झंझट नहीं बचता है और स्वचालित तरीके से निवेश हो जाता है। ना याद रखने की आवश्यकता और ना कहीं जाने की जरूरत। यहां पढ़ें SIP में निवेश कैसे करें.एक बार बैंक को ECS मेंडेट देने के बाद व्यवस्थित तरीके से आपका निवेश शुरु हो जाता है। नियमित निवेश की आदत हो जाने से निवेश में अपने आप अनुशासन आ जाता है और आप लंबी अवधि तक निवेश करने में सक्षम हो जाते हैं। ऐसे लोग जो एक साथ बड़ी राशि निवेश नहीं कर सकते वे Systematic Investment Plan का चुनाव करते हैं। इसमें मासिक आय पाने वाले, दुकानदार, गृहिणियां और छात्र भी निवेश कर सकते हैं। क्योंकि इसमें ₹500 प्रति माह तक भी निवेश कर सकते हैं तो जिनकी आय नियमित ना हो वे भी नियमित बचत कर सकते हैं।SIP को कभी भी बंद करवा सकते हैं और इसे बंद करवाने की कोई पेनल्टी भी नहीं लगती है। आप एक छोटे

समय के लिये इसे रुकवा भी सकते हैं। अपने लचीलापन की वजह से लोगों को SIP में निवेश करना भा रहा है। SIP शुरू करने के लिये कोई अलग से चार्ज नहीं देना पड़ता है। फिर भी आपको इसके सभी लाभ मिलते हैं। बिना किसी अतिरिक्त खर्च के आप Systematic Investment Plan के सभी लाभ प्राप्त कर सकते हैं.यूं तो बाजार की चढ़ती उतरती चाल में SIP फायदेमंद रहता है मगर तेजी से लगातार लंबे समय तक बढ़ती मार्केट में SIP, एक मुश्त निवेश के मुकाबले कम रिटर्न दे सकता है। जब बाजार एकदम मंदी स्थित में हों और आगे सिर्फ तेजी दिख रही हो तो एक मुश्त निवेश ज्यादा फायदेमंद हो सकता है। मगर ऐसे मौके की पहचान बहुत कठिन हो सकती है। किसी महीने यदि अनपेक्षित खर्च आ जाये तो आप इसे कम नहीं कर सकते और कठिनाई सह कर भी SIP में निवेश करना पड़ सकता है।

इक्विटी म्यूचुअल फंड टैक्स नियम

परिभाषा के अनुसार इक्विटी म्यूचुअल फंड अपनी पूंजीगत संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा घरेलू इक्विटी में निवेश करते हैं, जबकि शेष का निवेश विभिन्न ऋण और मुद्रा बाजार योजनाओं में किया जाता है। इक्विटी म्यूचुअल फंड रिटर्न सोने और संपत्ति के विपरीत धन कर के अधीन नहीं हैं, हालांकि, वे लघु और दीर्घकालिक पूंजीगत लाभ कराधान नियमों के अधीन हैं। वर्तमान में, यदि एक इक्विटी फंड निवेश को लाभ के लिए भुनाए जाने से पहले यूनिट आवंटन की तारीख से 1 वर्ष से कम समय के लिए आयोजित किया जाता है, तो रिटर्न शॉर्ट टर्म कैपिटल गेन (STCG) के अधीन होता है। इसी तरह, अगर इक्विटी फंड इकाइयों को स्विच या रिडेम्पशन के माध्यम से लाभ की बुकिंग से पहले 1 साल से अधिक समय तक रखा गया है, तो रिटर्न दीर्घकालिक पूंजीगत लाभ (LTCG) के अधीन है। वर्तमान में इक्विटी फंडों पर एसटीसीजी के लिए कराधान दर मुनाफे का 15% है, जबकि एलटीसीजी इक्विटी फंड निवेशकों के लिए पूरी तरह से कर मुक्त है। इस प्रकार आपको अपने इक्विटी निवेशों जैसे लार्ज कैप, मिडकैप, स्मॉल कैप या इंडेक्स फंड्स से कर मुक्त रिटर्न प्राप्त करने की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि आप रिडीम या स्विच करने से पहले यूनिट आवंटन की तारीख से 1 वर्ष के लिए निवेशित रहें। ऋण म्यूचुअल फंड पर शॉर्ट टर्म कैपिटल गेन टैक्स लागू होता है, यदि निवेश तीन साल से पहले बेचे जाते हैं, तो लाभ को आय में जोड़ा जाता है और निवेशक पर लागू आयकर स्लैब के अनुसार कर लगाया जाता है।

लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन टैक्स: अगर निवेश तीन साल के बाद बेचा जाता है, तो लाभ पर इंडेक्सेशन लाभ के साथ 20 प्रतिशत कर लगाया जाता है।

SWP क्या है

SWP म्यूचुअल फंड में अपने निवेश से नियमित आय भी हासिल कर सकते हैं. इसके लिए आपको सिस्टेमैटिक विद्ड्रॉल योजना यानी SWP चुनना होता है. तो क्या है ये SWP? कैसे ये आपको दिलाएगा नियमित आय? और SWP करना कब होता है फायदेमंद? सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट योजना की तरह है SWP.SWP: Systematic Withdrawal Plan निवेशकों के लिए सिस्टेमैटिक विद्ड्रॉल योजना है 'रामबाण'.आप अपना पैसा नियमित अवधि पर निकाल सकते हैं. इससे निवेशक के पास कैश फ्लो बना रहता है.

SWP के जरिए मिलेगी नियमित आय मिलता है .SWP के जरिए नियमित अंतराल पर पैसे निकाल सकते हैं. मासिक, तिमाही, सालाना आधार पर पैसे निकाल सकते हैं.NAV के आधार पर खाते से हर महीने पैसा निकालने का विकल्प. इस पैसे को MF में निवेश कर सकते हैं या ख़र्च कर सकते हैं.SWP. खासतौर से सीनियर सिटीज़न के लिए बनाया गया है. सीनियर सिटीजन को इससे ज्यादा फायदा होता है. सीनियर सिटीजन को इनकम पर कम टैक्स चुकाना पड़ता है.

SWP के लिए ये जानकारी जरूरी होनी चाहिए. आप किस फंड से SWP चलाना चाहते हैं.कितनी राशि की SWP चाहते हैं.कितने समय तक SWP चलाना चहते हैं.महीने की निर्धारित तारीख बताना जरूरी.

SWP शुरू करने से पहले क्या पता करें. आपका निवेश अगर डेट फंड में है. आप को 8% रिटर्न मिल रहा है. सालाना 10% विद्ड्रॉ कर रहे हैं. ऐसे में आप पूंजी ज्यादा खर्च कर रहे हैं. निवेशित पूंजी कम हो सकती है 5 साल में जितनी रकम की जरूरत हो उतनी रकम को डेट में निवेश करें. अतिरिक्त रकम को हाइब्रिड फंड में लगाएं.

कैसे काम करता है SWP .आपको अपने SWP की राशि/तारीख/ अवधि बताना जरूरी है. हर महीने पैसे आपके खाते में चले जाएंगे. ये पैसे आपके फंड से यूनिट्स बिकने से मिलते हैं. फंड में पैसे खत्म हुए तो SWP बंद हो जाएगा.

SWP और SIP में फर्क .SIP में हर महीने निर्धारित राशि आपके खाते से कट जाती है.खाते से कटी राशि म्यूचुअल फंड में निवेश के लिए जाती है.SWP में निर्धारित राशि आपके बैंक खाते में आ जाती है.SWP की राशि म्यूचुअल फंड यूनिट्स बिकने से आती है.

SWP में ये सावधानियां जरूरी हैं .SWP कभी भी इक्विटी म्यूचुअल फंड से ना चलाएं.बाज़ार गिरने पर आपके फंड पर असर पड़ता है. निर्धारित राशि के लिए ज्यादा यूनिट्स बेचने पड़ेंगे. ऐसा करने से पोर्टफोलियो बहुत जल्दी खत्म हो जाएगा.SWP के लिए डटे/लिक्विड फंड्स बेहतर विकल्प हैं. ज़रूरत के मुताबिक निवेशक राशि चुन सकते हैं. बाज़ार में निवेश रहने से अच्छे रिटर्न की उम्मीद,महंगाई को मात देने के लिए अच्छा विकल्प. बाज़ार में उतार-चढ़ाव को झेल सकता है. इक्विटी में 1 साल से कम पर STCG लगता है. डेट में 3 साल से कम पर STCG. इक्विटी में 1 लाख से ज्यादा मुनाफा तो लगेगा टैक्स. इक्विटी म्यूचुअल फंड भुनाने पर लगेगा टैक्स.SWP करते वक्त आपको टैक्स देनदारी का ध्यान रखना होता है. हर विद्ड्रॉल को रिडेम्पशन माना जाता है. ऐसे में आपको इन पर कैपिटल गेन टैक्स देना पड़ता है. कैपिटल गेन तय टैक्स स्लैब के हिसाब से लगता है|

म्यूच्यूअल फंड के प्रकार

म्यूच्यूअल फंड में निवेश करने के लिए इसकी मूलभूत तथ्यों के बारे में जानना बहुत ज़रूरी है। इनमें सबसे जरूरी बात यह जानना है की वास्तव में म्यूच्यूअल फंड कितने प्रकार के होते हैं|-

फंड के भुगतान के दृष्टिकोण से निम्न दो भागों में बांटा हुआ है:

- ओपन एंडेड फंड
- क्लोज एंडेड फंड

निवेश के दृष्टिकोण से म्यूच्यूअल फण्ड के प्रकार:

- इक्विटी (Equity) फंड्स
- संतुलित फंड (बैलेंस फंड) /डायवर्सिफाइड फंड
- इंडेक्स फंड्स
- गोल्ड फंड्स
- डेट (Debt) फंड्स
- समाधान (Solution) ऑरीएन्टिड फंड्स

म्यूच्यूअल फंड (ओपन एंडेड फंड)

आसान शब्दों में कहें तो वो फंड जिसमें निवेशक को कभी भी यूनिट्स खरीदने एवं बेचने की आजादी होती है,इन फंड्स को ओपन एंडेड म्युचुअल फंड कहलाते हैं, इन फंड्स में जब चाहे तब निवेश किया जा सकता है| निवेशक कभी भी इन फंड्स से बाहर निकल सकते हैं| इन फंड्स का नेट एसेट वैल्यू (NAV) रोजाना तय होता है,इसी रेट के आधार पर फंड की खरीद-बिक्री होती है,प्रकृति के आधार पर देखें तो अधिकांश म्युचुअल फंड योजनाएं ओपन एंडेड होती हैं,इन फंड्स की लिक्विडिटी (Liquidity) सरल होती है,आप आसानी से वर्तमान एनएवी के आधार पर बेचकर अपनी पूँजी प्राप्त कर सकते है,इन फंड्स को खरीदने व बेचने पर कोई भी समय आधारित बाध्यता नहीं होती है,इस म्युचुअल फंड में निवेश के लिए आपको बड़ी पूँजी की जरूरत नहीं होती,आप अपनी बचत पैसों को एसआईपी के माध्यम से निवेश कर सकते हैं,ओपन एंडेड फंड का पुराना प्रदर्शन जानना आसान होता है,इस प्रदर्शन के आधार पर निवेशक अपनी

निवेश योजना बना सकते हैं,इन फंड्स में निवेशक कभी भी निवेश के लिए प्रवेश (Entry) कर सकते है और कभी भी बहार निकल सकते है,बहुत जल्द निवेशक निकल न जाए इसके लिए कोई निश्चित समय (जैसे 1 साल) से पहले निकलने पर Exit Load के तौर पर कुछ चार्ज देना पड़ता है,यह चार्ज आम तौर पर 1 % का होता है।नुकसान की बात करें तो बाज़ार में उतार-चढ़ाव का इन पर सीधा असर पड़ता है. NAV में उतार-चढ़ाव होता रहता है. फंड हाउस फंड मैनेजर्स को नियुक्त करते हैं और ये फंड मैनेजर तमाम फैसले लेते हैं. इन फैसलों में निवेशको की मर्ज़ी नहीं होती है|

म्यूच्यूअल फंड (क्लोज एंडेड फंड)

जैसा की नाम से ही स्पष्ट है कि ये निश्चित बाध्यताओं पर आधारित म्युचुअल फंड हैं|ये फंड्स न्यू फंड ऑफर (NFO) के जरिये बाजार में लाए जाते हैं| इन म्युचुअल फंड योजनाओं में निवेश की निश्चित अवधि तय होती है|जो पूरी होने से पहले इन फंड्स को नहीं बेचा जा सकता|यूनिट्स स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्ट की जाती हैं और एक्सचेंज पर ही इन फंड्स को बेचा जा सकता है|इस फंड की यूनिट की कीमत NAV से कम-ज्यादा हो सकती है| क्लोज्ड एंडेड फंड्स में एकमुश्त पैसा निवेश किया जाता है|ये फंड्स मार्केट में उतार-चढ़ाव के दौरान निवेश बनाए रखते हैं| इनकी निवेश योजना पर बाजार के उतार चढाव का असर नहीं होता है,क्योंकि इनके फंड मैनेजर का निवेश को लेकर नजरिया साफ होता है| म्युचुअल फंड की इस योजना में निवेश से पूर्व इसके लाभ को समझना जरूरी होता है| क्लोज्ड एंडेड फंड मार्केट के उतार-चढ़ाव से प्रभावित नहीं होते हैं, क्योंकि लंबे समय तक निवेश के लिए क्लोज्ड एंडेड फंड्स बेहतर होते हैं| इसमें मैच्योरिटी तक निवेश के कारण कम्पाऊंडिंग रिटर्न का लाभ भी मिलता है| ये फंड्स फिक्स मैच्योरिटी वाले डेट इंस्ट्रूमेंट्स में भी निवेश रखते हैं|लंबी समय अवधि के कारण बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम होता है|क्लोज फंड में निवेश करने से पहले उस फंड में किस प्रकार के नुकसान हो सकते हैं उसके बारे में जानना भी आवश्यक होता है क्लोजिंग फंड में लंबे समय के लिए निवेश राशि का लॉक इन होना सबसे बड़ी समस्या है और मार्केट के लाभ में जाने का तत्काल कोई लाभ नहीं होता है लंबे समय में निवेश करने पर खास रिटर्न नहीं मिलता है ओपन एंडेड फंड के मुकाबले प्रदर्शन भी कोई खास नहीं होता है| सेबी(SEBI) की नई गाइडलाइन के अनुसार म्यूच्यूअल फंड द्वारा इस तरह स्कीम में एग्जिट रूट भी निर्धारित किया

जाता है ताकि यदि किसी निवेशक को पैसों की आवश्यकता होती है तो वह उस फंड से बाहर आ सकता है जिसके लिए उसे एग्जिट लोड चुकाना पड़ता है क्लोज्ड एंडेड फंड्स की NAV को साप्ताहिक प्रदर्शित किया जाता है| क्लोज एंडेड फंड स्कीम 3 से 5 साल के लॉक इन के पीरियड में उपलब्ध होती है|

इक्विटी(Equity) म्यूचुअल फंड

इक्विटी म्युचुअल फंड में निवेश दूसरे तरह के निवेश की तुलना में ज्यादा अच्छा रिटर्न देता है क्योंकि इसमें ज्यादा अच्छा रिटर्न मिलता है तो दूसरे निवेश की तुलना में इसमें ज्यादा रिस्क भी होता है क्योंकि यह पूरा फंड इक्विटी फंड अर्थात शेयर में निवेश करता है इसके द्वारा निवेश किए गए यह राशि का एक बहुत बड़ा हिस्सा इक्विटी में निवेश किया जाता है अर्थात शेयर में निवेश किया जाता है यदि आप इसमें लंबे समय के लिए निवेश करते हैं यदि आप इस तरह के फंडों से बहुत अच्छा रिटर्न प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि इस तरह के फंडों का रिटर्न पूर्ण तहा बाजार के उतार-चढ़ाव पर निर्भर करते हैं तो इनमें जोखिम भी बहुत ज्यादा होता है यदि आप इन फंडों में लंबे समय के लिए निवेश करते हैं तो आप बहुत अच्छा रिटर्न प्राप्त कर सकते हैं यदि आप इक्विटी फंड से प्राप्त रिटर्न का औसत भी निकाले तो यह दूसरी तरह के निवेश से ज्यादा अच्छा रिटर्न देता है, इन फंडों का आप पिछले साल का रिटर्न आसानी से चेक कर सकते हैं| इन फंडों के द्वारा अच्छे रिटर्न देने के कारण बहुत से छोटे निवेशक अर्थात रिटेल निवेशक इस तरह के फंडों में निवेश करते हैं इन फंडों में निवेश करने का सबसे अच्छा समय जब शेयर बाजार गिर रहा हो तब इन फंडों में निवेश करना चाहिए या फिर आप एसआईपी(SIP) के जरिए भी इन फंडों में हर महीने छोटे-छोटे अमाउंट में निवेश कर सकते हैं जिससे आपको बाजार के उतार-चढ़ाव का ज्यादा असर नहीं पड़ेगा इस प्रकार से निवेश करके आप एक अच्छा रिटर्न प्राप्त कर सकते हैं|इक्विटी म्यूचुअल फंड में कई तरह के फंड होते हैं,आइए हम आगे इक्विटी फंड के अलग-अलग प्रकार के फंडो के बारे में पढ़ेंगे| मार्केट में कई सारे ऑप्शंस है इक्विटी फंड्स में निवेश करने के लिए, परंतु यह फंड उन निवेशकों के लिए सही माना जाता है जो जोखिम लेने के काबिल हो और बेहतर रिटर्न्स पाना चाहते है| इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के अनेक प्रकार है जैसे की,

-लार्ज कैप म्यूचुअल फंड्स

-मिड कैप म्यूचुअल फंड्स

-स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड्स

-सेक्टर फंड्स

-मल्टी कैप म्यूचुअल फंड्स

सभी तरह के इक्विटी फंड में आपको दो तरह के ऑप्शन मिलते हैं| अगर आप म्यूचुअल फंड में निवेश करने जा रहे हैं तो आपके लिए स्कीम की बारीकियों को समझना फायदेमंद रहेगा. स्कीम खरीदते वक्त गलत फैसला आपके रिटर्न को कम कर सकता है. यही नहीं आपके मूलधन की वैल्यू भी घट सकती है. स्कीम खरीदने से पहले आपको तय कर लेना चाहिए कि स्कीम के कौन से विकल्प का चुनाव करना है. ग्रोथ और डिविडेंड के विकल्प को लेकर अक्सर निवेशक उलझन में रहते हैं. हम यहां आपको ग्रोथ और डिविडेंड के विकल्प के बारे में बता रहै हैं. इससे आपको स्कीम में निवेश करते वक्त सही फैसला लेने में मदद मिलेगी.

ग्रोथ ऑप्शन का मतलब क्या है? इस ऑप्शन का चुनाव करने पर आपको छोटी अवधि में स्कीम से कोई आय नहीं होती है. इसका मतलब है कि आपकी स्कीम पर मिलने वाला डिविडेंड आपकी जेब में नहीं जाता है. आपको पैसा तभी मिलता है, जब आप अपनी यूनिट्स रिडीम करते हैं. यानी उन्हें बेचते हैं. इसका फायदा यह है कि इस विकल्प में आपका निवेश बढ़ता रहता है. उदाहरण के लिए अगर आपने 15 रुपये एनएवी की दर से म्यूचुअल फंड की 1000 यूनिट्स खरीदी है और आप इसे दो साल बाद 20 रुपये की एनएवी पर बेचते हैं तो 5 हजार रुपये इस निवेश पर आपका रिटर्न हुआ. ग्रोथ का विकल्प वैसे निवेशकों के लिए सही है, जो लंबी अवधि के लिए निवेश करना चाहते हैं. इसकी वजह यह है कि रिटर्न पर कैपिटल गेंस नहीं देना पड़ता. दूसरा, लंबी अवधि में रिटर्न बढ़ जाता है. क्योंकि सिक्योरिटी खासकर शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव होता रहता है. लंबी अवधि में रिटर्न पर इस उतार-चढ़ाव का असर कम देखने को मिलता है. ग्रोथ के विकल्प में निवेशक को कंपाउंडिंग का भी फायदा मिलता है. इसलिए यह विकल्प उन निवेशकों के लिए सही है, जिन्हें अपने निवेश पर नियमित आय नहीं चाहिए.

डिविडेंड ऑप्शन का मतलब क्या है? डिविडेंड ऑप्शन में निवेशक को म्यूचुअल फंड कंपनी समय-समय पर डिविडेंड का भुगतान करती है. यह विकल्प ऐसे निवेशकों के लिए सही है, जो छोटी अवधि के लिए म्यूचुअल

फंड की स्कीम में पैसा लगाना चाहते हैं. खासकर डेट फंड के मामले में यह विकल्प सही रहता है. डिविडेंड ऑप्शन वाले डेट म्यूचुअल फंड बुजुर्ग लोगों के लिए सही हैं, जिन्हें नियमित आय की जरूरत होती है. हालांकि इस स्कीम में आपके निवेश की वैल्यू अपेक्षाकृत कम बढ़ती है
ध्यान रखने वाली बात यह है कि डिविडेंड की रकम मिलने से निवेशक को कंपाउंडिंग का फायदा उतना नहीं मिलता है, जितना ग्रोथ ऑप्शन में मिलता है. लेकिन यह बात सबसे अहम है कि म्यूचुअल फंड के डिविडेंड ऑप्शन में भी डिविडेंड की गारंटी नहीं होती. डिविडेंड का फैसला म्यूचुअल फंड कंपनी पर निर्भर करता है. कई बार पूरे साल स्कीम में डिविडेंड नहीं मिलता है. डिविडेंड में एक और ऑप्शन है जिसे डिविडेंड रीइनवेस्टेड कहते हैं. इसमें निवेशक को ग्रोथ और डिविडेंड दोनों का ही फायदा मिलता है. अंतर यह है कि डिविडेंड की रकम निवेशक की जेब में नहीं जाती है. उसके बदले निवेशक को यूनिट्स आवंटित कर दी जाती है. लंबी अवधि में यह विकल्फ काफी फायदेमंद है| आइए हम आगे म्यूचल फंड के अलग-अलग तरह योजनाओं के बारे में पढ़ते हैं|

लार्ज कैप म्यूचुअल फंड

लार्ज कैप म्यूचुअल फंड उन फर्मों में निवेश करते हैं जिनकी साल दर साल लगातार विकास और उच्च मुनाफे की संभावना है, जो समय के साथ स्थिरता भी प्रदान करते हैं। ये स्टॉक लंबी अवधि में लगातार रिटर्न देते हैं। ये अच्छी तरह से स्थापित कंपनियों के शेयर हैं जिनकी बाजार में मजबूत पकड़ है और आमतौर पर इसे सुरक्षित निवेश माना जाता है। लार्ज कैप फंड सुरक्षित माने जाते हैं, इनमें अच्छा रिटर्न है और बाजार के उतार-चढ़ाव में अन्य की तुलना में कम अस्थिरता है। इसलिए, निवेशक अपने फंड को लार्ज-कैप में निवेश करने के लिए अधिक उत्सुक हैं, भले ही ब्लू चिप कंपनियों के शेयर की कीमत अधिक हो।बड़ी कंपनियां अच्छी तरह से स्थापित हैं, जिसका अर्थ है कि उनके पास अधिक सुसंगत आय है। इसीलिए लार्ज कैप शेयरों में सबसे बड़ा लाभ वे स्थिरता है जो वे प्रदान कर सकते हैं। लार्ज कैप म्युचुअल फंड मिड कैप और स्माल कैप फंड से कम अस्थिर होते हैं। जैसा कि बड़ी कंपनियों में निवेश किया जाता है, इन फंडों में कम जोखिम होता है। लॉन्ग-टर्म में लार्ज कैप फंड्स में मिड कैप और स्मॉल कैप फंड्स से बेहतर रिटर्न मिलता है। बाजार / व्यापार में मंदी के दौरान, निवेशक बड़ी कैप फर्मों में आते हैं क्योंकि वे एक सुरक्षित निवेश हैं। चूंकि लार्ज-कैप कंपनियों के पास लंबे समय तक व्यवसाय होता है, ऐसे

कंपनियों के बारे में डेटा / विवरण आसानी से उपलब्ध होते हैं, जो इसे प्रदान करना आसान हो जाता है| शेयरधारकों और निवेशक। यह निर्धारित करने का एक आसान तरीका भी है कि क्या कोई कंपनी निवेश के लायक है।एनएससी और बीएसई में शामिल बाजार पूंजीकरण के हिसाब से टॉप 100 कंपनियों को कहा जाता है| लार्ज कैप कंपनी वह होती है जिन कंपनी की मार्केट कैपिटलिज़ेशन 10,000 करोड़ या उससे अधिक होती है|

मिड-कैप म्यूचुअल फंड

मिड-कैप फंड वे फंड हैं, जिन्हें कंपनी के आकार के संदर्भ में लॉर्ज-कैप फंड और स्मॉल-कैप फंड के बीच रखा जा सकता है। ये कंपनियां लार्ज-कैप कंपनियों की तुलना में अपेक्षाकृत छोटी होती हैं, लेकिन इनमें लार्ज-कैप कंपनियों की तुलना में अधिक राजस्व बढ़ाने और रिटर्न देने की क्षमता होती है। चूंकि ये कंपनियां बाजार के उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं और इसलिए इनमें किया गया निवेश जोखिम भरा होता है। मिड-कैप कंपनियां अपने विकास के चरण में होती हैं और वे उचित अवसरों की तलाश करके अपना विस्तार और विकास करना चाहती हैं। मिड-फंड निवेश के माध्यम से निवेशक अपने पोर्टफोलियो को विविधता प्रदान कर सकते हैं और बाजार का लाभ उठाकर अपने कोष में काफी वृद्धि कर सकते हैं। यह उन निवेशकों के लिए आदर्श विकल्प है, जो अधिक जोखिम लेने की क्षमता रखते हैं। यदि आप अधिक जोखिम उठाकर अपने रिटर्न को बढ़ाना चाहते हैं, तो आप भी इस तरह के फंड में निवेश कर सकते हैं। मार्केट कैप के अनुसार देखें तो जिन कम्पनियों का बाजार में पूंजीकरण 1000 करोड़ से 10000 करोड़ तक होता है, वे सभी कंपनी मिड कैप कम्पनी की श्रेणी में आती हैं|मिड कैप म्युचुअल फंड में ऐसी ही कम्पनियों में निवेश किया जाता है|

स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड

स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड वैसे फंड होते हैं, जो कम मार्केट कैप (Market Capitalisation) वाली कंपनियों में निवेश करते हैं. शेयर बाजार में सूचीबद्ध ऐसी कंपनियों के कारोबार में वृद्धि की तेज संभावनाओं का आकलन करने के बाद इनकी पहचान की जाती है| मार्केट कैप के लिहाज से शेयर बाजार की शीर्ष 250 कंपनियों को छोड़कर बाकी कंपनियों में स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड निवेश करती हैं. स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड अपने निवेश की रकम का 65% तक छोटी कंपनियों में लगाते हैं. इसके बाद बची 35% रकम को फंड मैनेजर मिड, लार्ज या स्मॉल कैप कंपनियों के शेयरों में

लगाते हैं| स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड सेगमेंट में फंड मैनेजर के पास बड़ी संख्या में कंपनियों के शेयरों को चुनने की आजादी है. पूंजी बाजार नियामक सेबी की तरफ से स्कीम कैटेगरी की शर्तें तय करने के बाद फंड मैनेजर के पास लार्ज कैप और मिड कैप सेगमेंट में निवेश करने के विकल्प सीमित हो गए हैं.जहां लार्ज कैप म्यूचुअल फंड सेगमेंट में सिर्फ 100 कंपनियां निवेश के लिए उपलब्ध हैं, वहीं मिड कैप म्यूचुअल फंड सेगमेंट में 150 कंपनियां हैं. स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड सेगमेंट में 2,000 से अधिक कंपनियों के शेयर निवेश के लिए उपलब्ध हैं| लार्ज कैप म्यूचुअल फंड सेगमेंट में एक ही कंपनी को 30-40 विश्लेषक कवर करते हैं, जबकि BSE के स्मॉल कैप इंडेक्स में कई शेयरों को एक विश्लेषक भी ट्रैक नहीं करता. स्मॉल कैप सेगमेंट से फंड मैनेजरों के पास अल्फा जेनरेट करने की काफी गुंजाइश है. स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड सेगमेंट बड़ा होने की वजह से फंड मैनेजर इनमें निवेश बढ़ाना चाहते हैं. निवेश करने से पहले आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड हाई रिस्क मार्केट कैटेगरी है. इसलिए जो लोग निवेश में काफी जोखिम उठा सकते हैं और जिनका निवेश का नजरिया 7-10 साल का हो, उन्हें ही स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड में निवेश करना चाहिए. निवेशकों को पोर्टफोलियो का एक हिस्सा स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड में रखना चाहिए. अगर आप स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड में निवेश कर रहे हैं तो SIP की मदद लें. अगर आप रिटायरमेंट या बच्चे की शादी जैसी लंबी अवधि के लक्ष्य के लिए निवेश करना चाहते हैं, तो आपके लिए स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड अच्छे विकल्प साबित हो सकते हैं|

मल्टीकैप म्यूचुअल फंड

ये डायवर्सिफाइड म्यूचुअल फंड हैं. निवेश के मामले में इनके हाथ बंधे नहीं होते हैं. म्यूचुअल फंड की ये स्कीमें विभिन्न मार्केट कैपिटलाइजेशन वाली कंपनियों में निवेश करती हैं. सेबी के दिशानिर्देशों के अनुसार, इन स्कीमों को अपने पोर्टफोलियो का 65 फीसदी इक्विटी और इक्विटी से जुड़े इंस्ट्रूमेंट में निवेश करना है. इनके पोर्टफोलियो में लार्ज कैप, मिड कैप और स्मॉल कैप स्टॉक शामिल होते हैं. ये शेयरों का काफी डायवर्सिफाइड पोर्टफोलियो बनाकर रखते हैं. निवेशकों को नहीं पता होता है कि लार्ज, मिड या स्मॉल कैप फंडों में से कौन अच्छा करेगा. मल्टी कैप स्कीमों में फंड मैनेजर के पास फ्लेक्सिबिलिटी रहती है. वे जरूरत के अनुसार पोर्टफोलियो में लार्ज, मिड और स्मॉल कैप शेयरों में निवेश घटाते-बढ़ाते रहते हैं. उदाहरण के लिए जब मिड और स्मॉल कैप सेगमेंट का वैल्यूएशन

बढ़ जाता है तो वे लार्ज कैप की ओर रुख कर लेते हैं. इसी तरह लार्ज कैप का वैल्यूएशन बढ़ने पर मिड और स्मॉल कैप में एलोकेशन बढ़ा दिया जाता है. इसके उलट शुद्ध लार्ज कैप फंड को अपने पोर्टफोलियो का कम से कम 80 फीसदी टॉप 100 शेयरों में निवेश करना पड़ता है. मिडकैप फंड अपने एसेट का 65 फीसदी 101-250 के पायदान पर आने वाली कंपनियों में निवेश करते हैं. लंबी अवधि में मिड/स्मॉल कैप फंडों के मुकाबले मल्टी कैप में जोखिम घट जाता है. जो निवेशक एक-एक शेयर को छांटने में माथापच्ची नहीं करना चाहते या जिन्हें नहीं पता कि उनके लिए कौन से मार्केट कैपिटलाइजेशन वाले फंड उपयुक्त हैं, उन्हें मल्टी कैप फंडों में निवेश करना चाहिए. जब यकीन हो जाए कि उन्हें किस कैटेगरी के फंडों में निवेश करना है तो वे उन फंडों में स्विच भी कर सकते हैं. जो निवेशक एक ही पोर्टफोलियो में जोखिम और अस्थिरता के बीच संतुलन बनाना चाहते हैं, वे भी मल्टी कैप फंडों का विकल्प चुन सकते हैं. यह कैटेगरी उन निवेशकों के लिए उपयुक्त है जो निवेश के साथ मामूली जोखिम ले सकते हैं. इस तरह के निवेशकों के लिए शुद्ध लार्ज कैप फंडों के मुकाबले इनमें पैसा लगाना समझदारी है. निवेशकों को मल्टी कैप फंडों में निवेश के लिए कम से कम पांच साल की अवधि रखनी चाहिए. इससे उन्हें जोखिम कम करने में मदद मिलेगी. साथ ही वे चक्रवृद्धि ब्याज का फायदा भी उठा सकेंगे|

सेक्टर म्यूचुअल फंड

यह एक म्यूचुअल फंड स्कीम है, जो पूरा का पूरा कॉरपस या उसका बड़ा हिस्सा किसी एक सेक्टर में लगाती है। कुछ इन्वेस्टर्स सेक्टर फंड्स तब चुनते हैं, जब उन्हें लगता है कि वह सेक्टर समूचे मार्केट को आउटपरफॉर्म करेगा। दूसरे इन्वेस्टर्स पोर्टफोलियो में शामिल दूसरी होल्डिंग्स की हेजिंग करने के मकसद से सेक्टर फंड्स पर दांव लगाते हैं। मिसाल के लिए अगर आपको लगता है कि आने वाले दिनों में कई रेट कट्स हो सकते हैं, जिससे बैंकों को फायदा हो सकता है, तो इसका सबसे बड़ा फायदा बैंकिंग सेक्टर फंड्स को होगा। सेक्टर फंड्स मार्केट के मुकाबले ज्यादा रिस्की होते हैं और ज्यादा उथल-पुथल वाले होते हैं क्योंकि इनमें डायवर्सिफिकेशन बहुत कम होता है। हालांकि रिस्क लेवल सेक्टर पर डिपेंड करता है।यहां कुछ कॉमन सेक्टर फंड्स FMCG, IT, फार्मा, बैंकिंग ऑटो और इंफ्रा सेगमेंट के हैं। बैंकिंग और इंफ्रा ETF जैसे कुछ ETF सेक्टर फंड्स भी हैं| सेक्टर फंड्स में डायवर्सिफाइड इक्विटी म्यूचुअल फंड्स से ज्यादा रिस्क होता है। इसलिए ये फंड्स उन इनवेस्टर्स के लिए सही माने जाते हैं, जिन्हें लगता है कि एक खास ग्रुप के शेयरों का परफॉर्मेंस मार्केट इंडेक्स से बेहतर हो

सकता है। कई बार ज्यादा रिस्क लेने में इंटरेस्ट रखने वाले रेगुलर इक्विटी इनवेस्टर भी इन पर दांव लगाते हैं। ऐसे फंड का इस्तेमाल कोर पोर्टफोलियो होल्डिंग को सपोर्ट करने में भी होता है। इनमें 3 से 5 साल के लिए इनवेस्टमेंट किया जा सकता है। सेक्टर फंड्स का ऐक्सपोजर किसी एक सेक्टर या चुनिंदा शेयरों में होता है, इसलिए उनमें डायवर्सिफाइड इक्विटी म्यूचुअल फंड के मुकाबले ज्यादा रिस्क होता है। इनके फंड मैनेजर्स के पास सेक्टर में ऐक्सपोजर बहुत कम करने की ज्यादा गुंजाइश नहीं होती, भले ही उसका परफॉर्मेंस लगातार खराब हो रहा हो। मिसाल के लिए अगर इकनॉमी स्लोडाउन की गिरफ्त में है तो इनवेस्टर्स FMCG, फार्मा और IT जैसे डिफेंसिव सेक्टर्स की तरफ भागते हैं, लेकिन अगर बैंकिंग सेक्टर फंड का एक्सपोजर बैंकिंग सेक्टर में ही होगा, जिससे उनको नुकसान होने का खतरा बनेगा। सेक्टर फंड्स में ज्यादा रिस्क होने के चलते फाइनेंशियल प्लानर्स को लगता है कि इनवेस्टर्स किसी एक सेक्टर फंड में अपने पोर्टफोलियो का 5 से 10 पर्सेंट तक ही इनवेस्ट करने के बारे में सोचना चाहिए।

कॉन्ट्रा म्यूचुअल फंड

कॉन्ट्रा फंड इक्विटी म्यूचुअल फंड हैं, जो बाजार में विपरीत नजरिए के साथ पैसा लगाते हैं. ये भेड़चाल में निवेश करने में यकीन नहीं करते हैं. जब गिरावट के समय दूसरे शेयरों में बिकवाली कर रहे होते हैं, ये स्कीमें उसी समय इन शेयरों को खरीदती हैं. अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहे शेयरों और सेक्टरों में खरीदने का फैसला यह सोचकर लिया जाता है कि लंबे समय में ये बेहतर करेंगे. अच्छी बात यह होती है कि गिरावट के समय कम भाव पर शेयर खरीदने को मिल जाते हैं. कॉन्ट्रा फंडों के पोर्टफोलियो में डिफेंसिव और पिटे हुए स्टॉक होते हैं जो बाजार की गिरावट के दौरान निगेटिव रिटर्न देते हैं. इनमें यह सोचकर पैसा लगाया जाता है कि लंबी अवधि में ये अच्छा रिटर्न देंगे.हालांकि, इन स्कीमों के साथ एक बड़ा जोखिम भी होता है. गलत शेयर पर दांव लगाने से काफी नुकसान हो सकता है. जिन शेयरों को पोर्टफोलियो में शामिल किया जाता है, वे अक्सर तेजी के दौर में कम अच्छा प्रदर्शन करते हैं. कोशिश इस तरह के शेयर को पहचान लेने की होती है, जिनमें लंबे समय में बढ़िया रिटर्न देने की क्षमता हो. सेबी की ओर से म्यूचुअल फंडों के दोबारा वर्गीकरण के बाद फंड हाउस कॉन्ट्रा फंड या वैल्यू फंड की पेशकश कर सकते हैं. लेकिन, उन्हें दोनों की पेशकश करने की अनुमति नहीं है|

वैल्यू म्युचुअल फंड

यह वह फंड होते हैं जहां पर म्युचुअल फंड कंपनी द्वारा वैल्यू कंपनी में निवेश किया जाता है अर्थात यदि म्युचुअल फंड को किसी कंपनी में अच्छी वैल्यू दिखती है जो कंपनी आने वाले समय में बहुत ग्रोथ कर सकती हैं इससे उस कंपनी के शेयर की कीमत बहुत बढ़ जाएगी लेकिन अभी किसी कारण से उस शेयर की कीमत डाउन चल रही है तो म्युचुअल फंड ऐसी वैल्यू कंपनी में निवेश करते हैं जिससे वह अच्छा रिटर्न प्राप्त कर सके. वैल्यू म्युचुअल फंड देखने में मल्टीकैप म्युचुअल फंड की तरह लगता है पर इन दोनों में एक बेसिक डिफरेंस होता है मल्टीकैप म्युचुअल फंड में आप स्मॉल कैप,लार्ज कैप एंड मिडकैप कंपनियों में निवेश करते हैं जबकि वैल्यू म्युचुअल फंड यदि कोई अच्छी कंपनी हो और उसकी कीमत उसकी बुक वैल्यू से कम हो ऐसी कंपनियों में वह निवेश करते हैं| वैल्यू म्युचुअल फंड में का एक बड़ा हिस्सा लार्ज कैप कंपनियों में निवेश किया जाता है जो किसी कारण से अभी अच्छा परफॉर्म नहीं कर रही है, पर आने वाले समय में अच्छा परफॉर्म कर सकती हैं| वैल्यू फंड बैसिक्ली वॉरेन बफेट के वैल्यू इन्वेस्टिंग के नियम को फॉलो करते हैं |

फ़ोकस फ़ंड म्यूचुअल

वह म्यूचुअल फंड होते हैं जो केवल अपेक्षाकृत छोटे किस्म के स्टॉक या बॉन्ड रखता है जो कुछ आयामों के समान होते हैं। परिभाषा के अनुसार, फोकस म्यूचुअल फंड,वह म्यूचुअल फंड होते हैं जो गिनी चुनी कंपनियों शेयरों में ही निवेश करते हैं इस म्यूचुअल फंड का पोर्टफोलियो दूसरे तरह के म्यूचुअल फंड की तरह वेल डायवर्सिफाई नहीं होता है| फोकस फंड में ज्यादा से ज्यादा 30 से 40 कंपनियां में निवेश किया जाता है|

ई.एल.एस.एस (ELSS) फ़ंड

म्यूचुअल ई.एल.एस.एस यानि इक्विटी लिंक्ड सेविंग स्कीम(Equity Linked Savings Scheme) एक डायवर्सिफाइड इक्विटी फंड है जो अपने अधिकतम कार्पस को इक्विटी में निवेश करता है. ELSS, इनकम टैक्स के अनुछेद 80C के अंतर्गत आने वाली बहुत ही लोकप्रिय स्कीम है जिसमें इनकम टैक्स की बचत भी होती है तथा निवेशित पूंजी में भी वृद्धि

होती है. इस स्कीम में तीन साल का लॉक इन पीरियड होता है. निवेश से पहले इस योजना को समझ लेना बहुत आवश्यक है| डायवर्सिफाइड का मतलब हुआ की यह फंड अलग उद्योगों और आकार की कंपनियों के शेयरों में निवेश करता है जिससे कि फंड में विविधता बनी रहे. यहाँ यह समझना आवश्यक है कि निवेश में जीतनी अधिक विविधता होगी उतना ही जोखिम कम होगा. चूंकि यह एक इक्विटी फंड है, ELSS ई.एल.एस.एस फंड से रिटर्न इक्विटी बाजार से रिटर्न दर्शाते हैं। बेहतर फंड मैनेजर आपको बाजार से भी बेहतर रिटर्न दे सकते हैं| सभी इक्विटी म्यूचुअल फंड योजनाओं की तरह ELSS में भी डिविडेंड तथा ग्रोथ के विकल्प मिलते है. निवेशकों को ग्रोथ विकल्प में 3 वर्ष की समाप्ति पर एक मुश्त राशि मिलता है। दूसरी ओर, लाभांश के विकल्प में, निवेशकों को नियमित रूप से लाभांश आय, जब भी लाभांश फंड द्वारा घोषित किया जाता है, यहां तक कि लॉक-इन अवधि के दौरान भी मिलती है। इस योजना के अंतर्गत निवेश पर तीन साल का लॉक इन पीरियड रहता है अर्थात आप जब इस योजना में निवेश करते हैं तो तीन साल तक अपने निवेश को निकाल नहीं सकते. क्योंकि अधिकतर शेयर बाजार में लम्बी अवधि के लिए ही निवेश करना फायदेमंद रहता है इसलिए तीन साल में आपको अच्छा खासा रिटर्न मिलने की संभावना बन जाती है. आप ELSS में SIP के द्वारा भी निवेश कर सकते है जिससे निवेश करना आसान हो जाता है तथा निवेश का जोखिम भी कम हो जाता है.| आयकर अधिनियम की धारा 80 सी के तहत एक वित्तीय वर्ष में अपने सकल कुल आय से अपने ELSS निवेश के 1 लाख रुपये तक कटौती के रूप में क्लेम कर सकते हैं. ELSS स्कीम से रिटर्न भी पूरी तरह करमुक्त हैं। टैक्स में छूट के लिए जितनी भी निवेश की अन्य योजनायें उपलब्ध हैं जैसे की बैंक डिपाजिट, NSC या PPF, ELSS सबसे कम लॉक इन पीरियड के साथ उपलब्ध है। ई.एल.एस.एस में लॉक-इन पीरियड काफी कम होता है। इसलिए भी लोग इसकी तरफ जाते हैं। इसमें रिटर्न भी अच्छा-खासा मिल जाता है। तीन साल के लॉक-इन पीरियड में ई.एल.एस.एस फंड्स ने तकरीबन 13 फीसदी का रिटर्न दिया है। वहीं 5 साल की अवधि में यह रिटर्न लगभग 17 फीसदी तक भी पहुंचा है। ई.एल.एस.एस के अलावा जो स्कीम टैक्स बचत का विकल्प देती हैं उनमें 10 फीसदी से ज्यादा रिटर्न नहीं मिलता।

◆ ◆ ◆

डेब्ट म्यूचुअल फंड

जहां इक्विटी म्यूचुअल फंड्स पब्लिक लिस्टेड कंपनियों में निवेश करते हैं, वहीं डेब्ट फंड्स सरकारी और कंपनियों की फिक्स-इनकम सिक्योरिटीज में निवेश करते हैं। इनमें कॉर्पोरेट बॉण्ड, सरकारी सिक्योरिटीज, ट्रेजरी बिल, मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स और अन्य कई प्रकार की डेब्ट सिक्योरिटीज शामिल हैं। शेयर की तरह किसी कंपनी की इक्विटी में निवेश करना उस कंपनी की ग्रोथ के लिए हिस्सेदारी को खरीदना है। लेकिन जब आप डेब्ट फंड खरीदते हैं तो, आप जारी करने वाली संस्था को लोन देते हैं। सरकार और प्राइवेट कंपनियां अपने विभिन्न कार्यक्रमों को चलाने के लिए लोन पाने के लिए बिल और बॉण्ड जारी करती हैं। इन डेब्ट सिक्योरिटीज से आप जो ब्याज प्राप्त करते हैं उसका ब्याज और उसकी परिपक्वता अवधि पहले से निर्धारित होती है। इसलिए इन्हें 'फिक्स इनकम' सिक्योरिटी कहा जाता है, क्योंकि इसमें आपको पता होता है कि आपको क्या मिलने वाला है। इक्विटी फंड्स की तरह ही डेब्ट फंड्स में भी अलग-अलग सिक्योरिटीज में निवेश करके अच्छा मुनाफा बढ़ाया जाता है। डेब्ट फंड्स में अच्छा मुनाफा मिलता है, लेकिन इनमें रिटर्न्स की कोई गारंटी नहीं है। फिर भी, डेब्ट फंड्स में रिटर्न्स का अनुमान लगाया जा सकता है, जो कि इन्हें निवेशक के लिए सुरक्षित बनाता है। डेब्ट फंड्स अलग-अलग क्रेडिट रेटिंग्स की विभिन्न सिक्योरिटीज़ में निवेश करते हैं। सिक्योरिटी की क्रेडिट रेटिंग उसे जारी करने वाली संस्था का जोखिम निर्धारित करती है। ज़्यादा क्रेडिट रेटिंग का मतलब है कि मेच्योरिटी पर उस संस्था द्वारा ब्याज भुगतान और मूल राशि का भुगतान किए जाने की बेहतर संभावना है। इसलिए जो डेब्ट फंड्स हाई-रेटेड सिक्योरिटीज में निवेश करते हैं वे लो-रेटिड सिक्योरिटीज की तुलना में कम अस्थिर होती हैं। इसके अलावा दूसरा जो पहलू है वो है कि जिस सिक्योरिटी में डेब्ट फंड निवेश किया जा रहा है उसकी मेच्योरिटी (परिपक्वता) की अवधि। विभिन्न डेब्ट फंड्स अलग-अलग समयावधि की सिक्योरिटीज में निवेश करते हैं। मेच्योरिटी का समय जितना कम होगा, नुकसान की संभावना उतनी ही कम होगी। एक सामान्य निवेशक के लिए ये एक बेहतर विकल्प है। ये फिक्स डिपॉज़िट का अच्छा विकल्प है। डेब्ट फंड्स फिक्स डिपॉज़िट की रेंज में ही ब्याज देते हैं, लेकिन ये फिक्स डिपॉज़िट से ज़्यादा टैक्स में छूट प्रदान करते हैं। फिक्स डिपॉज़िट से जो आय होती है वो आपकी इनकम में जुड़ जाती है और आपको उस स्लैब के

अनुसार टैक्स देना पड़ता है। डेब्ट फंड्स के शॉर्ट-टर्म लाभ भी टैक्स योग्य आय में जुड़ती है। लेकिन जब समयावधि 3 वर्ष से ज़्यादा होती है तो टैक्स में ज़्यादा फायदा मिलता है। लंबे समय के लाभ पर इंडेक्शन के बाद 20% टैक्स लगाया जाता है। डेब्ट फंड्स फिक्स डिपॉज़िट के बजाय ज़्यादा तरल हैं। फिक्स डिपॉज़िट में जहां पूंजी लॉक हो जाती है, वहीं डेब्ट फंड्स में कभी भी निकाली जा सकती है। कुल राशि में से कुछ राशि निकालना भी डेब्ट फंड्स में संभव है। इन सब कारणों से डेब्ट फंड्स फिक्स डिपॉज़िट से बेहतर हैं। फिर भी, यह बात ध्यान रखनी ज़रूरी है कि फिक्स डिपॉज़िट की तरह, डेब्ट फंड्स में पूंजी की सुरक्षा या फिक्स रिटर्न की कोई गारंटी नहीं है।डेट म्युचुअल फंड का वर्गीकरण इस प्रकार है|

अल्ट्रा शॉर्ट टर्म फंड्स

यह डेट फंड की एक कैटेगरी है. अल्ट्रा शॉर्ट टर्म फंड कामर्शियल पेपर, ट्रेजरी बिल्स, सीडी (सर्टिफिकेट ऑफ डिपॉजिट्स) और कारपोरेट पेपर में निवेश करते हैं. इन इंस्ट्रूमेंट्स की औसत मैच्योरिटी अवधि 91 दिन से ज्यादा है| अल्ट्रा शॉर्ट टर्म फंड्स की मैच्योरिटी अवधि अपेक्षाकृत लंबी होती है. इनके पोर्टफोलियो में ऐसे इंस्ट्रूमेंट्स भी होते हैं जिनकी कीमतों में दैनिक आधार पर उतार-चढ़ाव होता है. इसलिए लिक्विड फंड की तुलना में इनकी वैल्यू में उतार-चढ़ाव थोड़ा ज्यादा होता है| इस फंड में ऐसे निवेशकों को पैसा लगाना चाहिए, जो शेयरों में तो निवेश करना चाहते हैं, लेकिन उन्हें बाजार की दिशा का अंदाजा नहीं रहता. इसी तरह निवेशक ऊंची कीमतों पर शेयरों में मुनाफावसूली कर कुछ समय के लिए अपना पैसा अल्ट्रा शॉर्ट टर्म फंड में रख सकते हैं. इस पैसे का इस्तेमाल रियल एस्टेट में निवेश करने में किया जा सकता है. वेल्थ मैनेजर्स सिस्टेमेटिक ट्रांसफर प्लांस (एसटीपी) के लिए भी अल्ट्रा शार्ट टर्म फंड्स के इस्तेमाल की सलाह देते हैं|अगर आप की इच्छा इक्विटी फंड में एकमुश्त निवेश की है और आप एक फंड में दांव नहीं लगाना चाहते तो आपको अल्ट्रा शार्ट टर्म फंड में पैसा लगाना चाहिए. अल्ट्रा शार्ट टर्म फंड्स में निवेश लिक्विड फंड से थोड़ा ज्यादा रिटर्न है|कई फंड हाउस अल्ट्रा शार्ट टर्म फंड में एग्जिट लोड नहीं लगाते हैं. हालांकि कई फंड हाउस बहुत ही कम एग्जिट लोड मसलन 0.25 से लेकर 0.5 फीसदी एग्जिट लोड लगाते हैं. यह लोड एक हफ्ते से 6 महीने के पीरियड के लिए लगता है|

लिक्विड डेट फंड्स

यह वह म्यूचुअल फंड्स होते हैं। ये आपका पैसा ट्रेजरी बिल्स, गवर्नमेंट सिक्योरिटीज और कॉल मनी जैसे बहुत शॉर्ट टर्म वाले मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करते हैं। ये फंड्स 91 दिनों के मैच्योरिटी पीरियड वाले इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश कर सकते हैं। लिक्विड फंड्स का इस्तेमाल निवेशक आमतौर पर एक से तीन महीने की अवधि के लिए करते हैं। उदाहरण के लिए, अगर आप दो महीने बाद हॉलिडे पर जाने वाले हों, तो उसके लिए तय पैसा आप लिक्विड फंड में निवेश कर सकते हैं। लिक्विड फंड्स का इस्तेमाल तब किया जा सकता है, जब आपके पास अचानक ज्यादा रकम आ जाए। यह रकम एक बड़े बोनस के रूप में हो सकती है या रियल एस्टेट की बिक्री से मिली नकदी हो सकती है या ऐसे अन्य जरियों से आई रकम हो सकती है। कई इक्विटी इनवेस्टर्स अपने निवेश को सिस्टेमैटिक ट्रांसफर प्लान (एसटीपी) के जरिए इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में बांटने के लिए भी लिक्विड फंड्स का उपयोग करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि इस तरीके से उन्हें बेहतर रिटर्न मिल सकता है। म्यूचुअल फंड्स की कैटेगरी में लिक्विड फंड्स को सबसे कम जोखिम वाला जरिया माना जाता है। इनमें सबसे कम वोलैटिलिटी भी रहती है। इसकी वजह यह है कि ये फंड्स आमतौर पर ज्याद क्रेडिट रेटिंग वाले इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करते हैं। इन फंड्स की नेट एसेट वैल्यू हासिल होने वाली इंटरेस्ट इनकम के दायरे तक ही बदलती है। लिक्विड फंड्स दूसरे डेट फंड्स से नेट एसेट वैल्यू के लिहाज से अलग होते हैं। किसी ट्रांजैक्शन डे को दोपहर बाद दो बजे तक किए गए निवेश (उपयोग के लिए दोपहर बाद दो बजे तक फंड्स की उपलब्धता पर निर्भर) के मामले में पिछले दिन के एनएवी पर यूनिट्स अलॉट की जाती हैं। इस तरह लिक्विड फंड्स एकमात्र ऐसी कैटेगरी है, जिसमें पिछले दिन के एनएवी का उपयोग होता है। किसी खास ट्रांजैक्शन डे को दोपहर बाद तीन बजे तक रिडेम्पशन के मामले में यूनिट्स उसी दिन के एनएवी पर रिडीम की जाती हैं और रकम को अगले वर्किंग डे पर बैंक अकाउंट में भेज दिया जाता है।

ओवरनाइट फंड

ओवरनाइट फंड उनमें से एक है. ये ओपन-एंडेड डेट स्कीमें हैं. ये फंड एक दिन में मैच्योर होने वाली प्रतिभूतियों में पैसा लगाते हैं. इसका मतलब है कि इन स्कीमों में फंड मैनेजर रोजाना आधार पर प्रतिभूतियों को खरीदते हैं. ये प्रतिभूतियां एक दिन में मैच्योर हो जाती हैं. फिर स्कीम के फंड को

दोबारा नई प्रतिभूतियों को खरीदने में लगाया जाता है. निवेश के इस तरह के दिशानिर्देश इन्हें काफी लिक्विड बना देते हैं. सेबी ने सभी तरह के म्यूचुअल फंडों के लिए निवेश के दिशानिर्देश तय कर रखे हैं. डेट म्यूचुअल फंड कैटेगरी में ओवरनाइट फंडों को सबसे सुरक्षित कहा जाता है. कारण है कि इनमें निवेश का नजरिया बहुत छोटा होता है. इन स्कीमों पर ब्याज दरों में बदलाव और किसी प्रतिभूति के डिफॉल्ट का फर्क नहीं पड़ता है. ओवरनाइट फंडों में न के बराबर जोखिम होता है. ये स्कीमें उन निवेशकों के लिए हैं जो छोटी अवधि के लिए काफी पैसा लगाना चाहते हैं. कंपनियां इस तरह की स्कीमों में करोड़ों रुपये लगाती हैं. कारण है कि बड़ी रकम के साथ थोड़ा भी उतार-चढ़ाव काफी असर डालता है. हालांकि, खुदरा निवेशकों के लिए ओवरनाइट फंडों में अतिरिक्त रिटर्न कमा पाना मुश्किल होता है.अन्य डेट म्यूचुअल फंडों की तरह अगर ओवरनाइट फंडों को तीन साल से अधिक समय के लिए रखा जाता है तो उन पर इंडेक्सेशन के साथ लॉन्ग टर्म कैपिटल गेंस टैक्स लगता है. तीन साल से पहले निवेश को बेचने पर आपको अपने इनकम टैक्स के स्लैब के अनुसार टैक्स देना पड़ता है|

क्रेडिट-रिस्क फंड

क्रेडिट-रिस्क फंड डेट फंड होते हैं. ये अपने कुल एसेट का कम से कम 65 फीसदी डबल ए (एए) से कम रेटिंग वाले पेपर (निवेश के एक तरह के साधन) में लगाते हैं. कम रेटिंग वाले पेपर में निवेश करके अधिक क्रेडिट जोखिम लेकर ये ज्यादा रिटर्न देते हैं. जिन कंपनियों के पेपर्स में पैसा लगाया जाता है, वे ज्यादा ब्याज दरों की पेशकश करती हैं. जब इनकी रेटिंग सुधरती है तो इनमें कैपिटल गेंस का लाभ भी मिलता है. इन फंडों में ब्याज आय का जोखिम कम होता है. कारण है कि इनके मेच्योरिटी की अवधि कम होती है. जोखिम-मुक्त पेपरों की तुलना में इनमें 2 से 3 फीसदी ज्यादा रिटर्न देने की क्षमता होती है. क्रेडिट-रिस्क फंड दो तरह से काम करते हैं. पहला, क्रेडिट-रिस्क फंड उन प्रतिभूतियों से ब्याज आय कमाते हैं, जिन्हें वे अपने पास बनाकर रखते हैं. दूसरा, चूंकि ये कम रेटिंग वाली प्रतिभूतियों में पैसा लगाते हैं, इसलिए प्रतिभूति की रेटिंग अपग्रेड होने पर इनमें कैपिटल गेंस का लाभ मिलता है. क्रेडिट रिस्क फंडों से मिलने वाले डिविडेंड पर टैक्स नहीं लगता है. लेकिन, स्कीम को 28.84 फीसदी की दर से डिविडेंड डिस्ट्रीब्यूशन टैक्स (DDT) देना पड़ता है. तीन साल के भीतर कमाए गए रिटर्न पर शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेंस टैक्स लगता है. यह उसी दर से

लगेगा जिस टैक्स स्लैब में आप आते हैं. तीन साल से ज्यादा इन्हें रखने पर 20 फीसदी इंडेक्सेशन के साथ लॉन्ग टर्म कैपिटल गेंस टैक्स लगता है. क्रेडिट रिस्क फंडों के साथ लिक्विडिटी का ज्यादा जोखिम होता है. पोर्टफोलियो में शामिल कम रेटिंग वाले बॉन्ड के डिफॉल्ट करने पर फंड मैनेजर के लिए इससे निकल पाना कठिन होता है. इसी के चलते फाइनेंशियल प्लानर निवेशकों को फंड के आकार को देखने की सलाह देते हैं. बड़ा एसेट आकार फंड मैनेजर को जोखिम को फैलाने की गुंजाइश देता है. निवेशकों को यह भी देखना चाहिए कि पोर्टफोलियो किसी एक बिजनेस ग्रुप में बहुत केंद्रित नहीं हो. अन्य डेट फंड की तुलना में इस कैटेगरी में ज्यादा जोखिम होता है. लिहाजा, ऐसे फंडों में निवेशकों को अपने डेट पोर्टफोलियो का 20 फीसदी से ज्यादा निवेश नहीं करना चाहिए|

डायनेमिक बॉन्ड फंड

डायनेमिक बॉन्ड फंड ओपन-एंडेड डेट स्कीमें हैं. ये फंड विभिन्न अवधि में मैच्योर होने वाली प्रतिभूतियों में निवेश करते हैं. बाजार की स्थितियों के अनुसार, ये पोर्टफोलियो में अलग-अलग अवधि वाली सिक्योरिटी शामिल कर अधिक रिटर्न पैदा कर सकती हैं. हालांकि, ड्यूरेशन को लेकर फंड मैनेजर का दांव गलत पड़ने पर स्कीम को नुकसान भी उठाना पड़ सकता है. बाजार में ब्याज दरों की चाल का बॉन्ड फंड पर असर पड़ता है. जब दरें नीचे जाती हैं तो लंबी अवधि के बॉन्ड फंडों को सबसे ज्यादा फायदा होता है. हालांकि, ज्यादा ब्याज दरों के माहौल में लॉन्ग ड्यूरेशन फंडों को भारी नुकसान पहुंचता है. इस तरह डायनेमिक बॉन्ड फंडों को बॉन्ड मार्केट में ऐसी अस्थिरता से उबरने का अच्छा जरिया माना जाता है. कारण है कि इनमें छोटी अवधि की प्रतिभूतियों में स्विच करने की फ्लेक्सिबिलिटी होती है. जो निवेशक जोखिम लिए बगैर कम रिटर्न के साथ संतोष कर सकते हैं, उन्हें शॉर्ट ड्यूरेशन फंडों में निवेश करते रहना चाहिए. लॉन्ग ड्यूरेशन फंड आपको अच्छा रिटर्न दे सकते हैं, लेकिन ये अस्थिर होते हैं. अगर कुछ जोखिम लेकर आप दोनों सेगमेंट का स्वाद चखना चाहते हैं तो डायनेमिक बॉन्ड फंडों में निवेश कर सकते हैं. हालांकि, ये स्कीमें उन निवेशकों के लिए कतई नहीं हैं, जो बिल्कुल जोखिम लेने को तैयार नहीं हैं. इन स्कीमों में निवेश को अगर कम से कम तीन साल बनाए रखा जाता है तो 20 फीसदी इंडेक्सेशन बेनिफिट के साथ लॉन्ग टर्म कैपिटल गेंस टैक्स लगता है. अगर

तीन साल के भीतर स्कीम को भुनाया जाता है तो शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेंस टैक्स देना पड़ता है. यह आपके इनकम-टैक्स स्लैब पर निर्भर करेगा|

गिल्ट फंड्स

ऐसी म्यूचुअल फंड स्कीमें होती हैं, जो मुख्य रूप से गवर्नमेंट सिक्युरिटीज में निवेश करती हैं। इन गवर्नमेंट सिक्युरिटीज में डेटेड सेंट्रल गवर्नमेंट सिक्युरिटीज, स्टेट गवर्नमेंट सिक्युरिटीज और ट्रेजरी बिल शामिल होते हैं। गिल्ट फंड्स में निवेश करने के बाद इन्वेस्टर्स को किसी तरह का क्रेडिट रिस्क नहीं होता है, क्योंकि इन सिक्युरिटीज की गारंटी केंद्र सरकार देती है। ये फंड्स लॉन्ग टर्म गवर्नमेंट सिक्युरिटीज पेपर्स में निवेश करते हैं इन स्कीमों में लिक्विडिटी और बायर्स की दिलचस्पी बढ़ाने के लिए रिजर्व बैंक ने कई कदम उठाए हैं। आरबीआई ने गवर्नमेंट सिक्युरिटीज में निवेश करने वाले गिल्ट फंड्स के लिए रिवर्स री-परचेज सुविधा का दायरा बढ़ा दिया है। सेंट्रल बैंक गिल्ट फंड्स ट्रांजैक्शन के लिए एक सब्सिडियरी जनरल लेजर अकाउंट और करंट अकाउंट की सहूलियत देता है। गिल्ट फंड्स को रिजर्व बैंक की रेमिटेंस फैसिलिटी स्कीम के तहत एक सेंटर से दूसरे सेंटर में फंड ट्रांसफर करने की सुविधा दी गई है गिल्ट फंड्स पूरी तरह जोखिम से मुक्त नहीं होते हैं। इसमें इंटरेस्ट रेट रिस्क बना रहता है। इंटरेस्ट रेट बढ़ने पर बॉन्ड की कीमत कम होती है। ऐसे में जब ब्याज दरों में तेजी आती है तो इसका प्रदर्शन अच्छा नहीं होता है। गिल्ट फंड्स में लिक्विडिटी रिस्क भी होता है। कोई सिक्युरिटी तब लिक्विड होती है, अगर उसे आसानी से खरीदा और बेचा जा सके। साथ ही उसके बायर्स और सेलर्स की संख्या लगभग बराबर हो। आमतौर पर ऐसा माना जाता है कि हायर लिक्विडिटी का मतलब कम रिस्क है।

कॉरपोरेट बांड

कॉरपोरेट बांड कोई भी कंपनी इश्यू कर सकती है, जिसे नॉन-कंवर्टिबल डिबेंचर (NCD) कहते हैं. NCD किसी कंपनी की ओर से जारी किए गए एक तरह के बॉन्ड होते हैं. इन पर ब्याज दरें तय होती हैं, जो कंवर्टिबल डिबेंचर के मुकाबले ज्यादा होती हैं. ये

सिक्योर्ड या अनसिक्योर्ड हो सकते हैं. सिक्योर्ड का मतलब गारंटी की जरूरत से है, वहीं अनसिक्योर्ड में गारंटी की जरूरत नहीं होती है. कॉरपोरेट बॉन्ड फंड को मिनिमम 80 फीसदी रकम अधिक रेटिंग वाले बॉन्ड में निवेश करना जरूरी होता है. फंड हाउसेज अपनी रकम का अधिकतर हिस्सा उन कॉरपोरेट बॉन्ड में निवेश करते हैं, जिनकी रेटिंग अच्छी होती है. इसलिए इनमें जोखिम कम होता है. बॉन्ड यील्ड में गिरावट आई है. छोटी बचत योजनाओं की ब्याज दर बेंचमार्क सरकारी बॉन्ड से जुड़ी है और इसकी हर तीन महीने पर समीक्षा की जाती है. बॉन्ड यील्ड में गिरावट बनी रही तो स्माल सेविंग्स में भी जमा पर ब्याज दरें घट सकती हैं. ऐसे में निवेशक कॉरपोरेट बॉन्ड का रुख कर सकते हैं. वहीं, पिछले दिनों लगातार रेट कट हुआ है. आगे भी रेट कट की उम्मीद है. यह सब डेट मार्केट के लिए बेहतर सेंटीमेंट हैं. इसका एक और बड़ा फायदा है कि डेट मार्केट में अनिश्चितता से निपटने में भी मदद मिलती है. कॉरपोरेट बॉन्ड फंड उनके लिए बेहतर है, जो 3 से 5 साल के लिए निवेश का नजरिया रखते हों. वहीं, बाजार में ज्यादा जोखिम नहीं लेना चाहते हैं. हालांकि यह ध्यान रखने वाली बात है कि ज्यादा रेटिंग वाली कंपनियों की रेटिंग भी फ्यूचर में कम हो सकती है. ऐसी कंपनियां भी पेमेंट में डिफाल्ट कर सकती हैं|

क्या है एक्सपेंस रेश्यो(Expense Ratio)

यह एक अनुपात है जो म्यूचुअल फंड के प्रबंधन पर आने वाले खर्च को प्रति यूनिट के रूप में बताता है. किसी म्यूचुअल फंड का एक्सपेंस रेश्यो निकालने के लिए उसकी कुल संपत्ति (एसेट अंडर मैनेजमेंट यानी AUM) में कुल खर्च से भाग दिया जाता है. म्यूचुअल फंड हाउस (एसेट मैनेजमेंट कंपनी यानी AMC) के कई खर्च एक्सपेंस रेश्यो में शामिल किये जाते हैं. फंड हाउस के पास प्रशिक्षित पेशेवरों की एक टीम होती है. यही टीम मार्केट और कंपनियों पर नजर रखती है. यही टीम किसी शेयर को खरीदने या उससे निकलने के फैसले समय पर लेने में मदद करती है. इसके साथ ही AMC ट्रांसफर और रजिस्ट्रार से संबंधित खर्च, कस्टोडियन, कानूनी एवं ऑडिट का खर्च, स्कीम की मार्केटिंग और उसके वितरण का खर्च उठाती है. ये सभी खर्च म्यूचुअल फंड की यूनिट खरीदने वाले ग्राहक से ही लिए जाते हैं. किसी म्यूचुअल फंड स्कीम की NAV (नेट एसेट वैल्यू) इस तरह के खर्च को घटाने के बाद निकाली गयी वैल्यू है. पूंजी बाजार नियामक सेबी ने म्यूचुअल फंड द्वारा वसूले जाने वाले एक्सपेंस रेश्यो की समीक्षा की है. सेबी ने अब एक्सपेंस रेश्यो की सीमा तय कर दी है. ओपन एंडेड इक्विटी म्यूचुअल फंड स्कीम में AUM के हिसाब से सेबी ने एक्सपेंस रेश्यो की सीमा तय कर दी है.जिस म्यूचुअल फंड स्कीम का AUM 500 करोड़ रुपये है वे एक्सपेंस रेश्यो के रूप में अधिकतम 2.25 फीसदी चार्ज कर सकती हैं. इसी तरह 500-750 करोड़ रुपये AUM वाली स्कीम के लिए एक्सपेंस रेश्यो 2% हो सकता है.750-2,000 करोड़ रुपये वाले फंड के लिए एक्सपेंस रेश्यो 1.75%, 2000-5000 करोड़ AUM वाली स्कीम के लिए 1.6

फीसदी और 5000-10,000 करोड़ रुपये AUM वाले फंड के लिए एक्सपेंस रेश्यो 1.5 फीसदी हो सकता है. सेबी के निर्देश के मुताबिक, 10-50,000 करोड़ AUM वाली स्कीम के लिए एक्सपेंस रेश्यो हर 5000 करोड़ रुपये बढ़ने के बाद 0.05 फीसदी कम होता चला जायेगा. अगर किसी म्यूचुअल फंड स्कीम का AUM 50,000 करोड़ से अधिक है तो उसके लिए AMC एक्सपेंस रेश्यो के रूप में 1.05 फीसदी चार्ज ले सकती हैं. मान लीजिये कि आपने किसी म्यूचुअल फंड स्कीम में 10,000 रुपये का निवेश किया. अगर इस फंड का एक्सपेंस रेश्यो दो फीसदी है तो इसका मतलब यह है कि इस रकम के प्रबंधन के लिए आपको 200 रुपये की फीस चुकानी होगी.इसका मतलब यह भी है कि अगर आपके निवेश पर साल भर में आपको 15 फीसदी रिटर्न मिला और एक्सपेंस रेश्यो दो फीसदी है तो आपका नेट रिटर्न 13 फीसदी रहा. कम एक्सपेंस रेश्यो का मतलब अधिक मुनाफा है, और कम एक्सपेंस रेश्यो का मतलब अधिक मुनाफा है, और एक्सपेंस रेश्यो अधिक होने का मतलब मुनाफा घटना है. हालांकि इसका मतलब यह भी नहीं है कि हमेशा एक्सपेंस रेश्यो अधिक होने का मतलब कम मुनाफा ही है. कई बार अधिक एक्सपेंस रेश्यो वाले फंड का रिटर्न भी शानदार हो सकता है|

बहुत आसान है म्यूचुअल फंड में सिप शुरू करना, यह है तरीका

सिस्टेमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान (सिप) आपको म्यूचुअल फंड स्कीमों में नियमित निवेश करने की सहूलियत देता है. जानकार इसे म्यूचुअल फंडों में निवेश का सबसे कारगर तरीका बताते हैं. सिप में निवेश शुरू करने के लिए कुछ शर्तों को पूरा करने की जरूरत होती है. इनके बारे में नीचे बताया गया है. 1. स्कीम के प्रकार, उसके प्रदर्शन, पोर्टफोलियो और अपने लक्ष्यों के हिसाब से सिप शुरू करना चाहिए. 2. सिप शुरू करने से पहले केवाईसी को पूरा करना पड़ता है. इसे हमेशा अपडेट रखना चाहिए. 3. निवेशक ऑनलाइन या ऑनलाइन दोनों तरीकों से सिप शुरू कर सकते हैं.

सिप को ऑफलाइन शुरू करने का तरीका इसके लिए निवेशक को एक फॉर्म भरने की जरूरत पड़ती है. इसे फंड हाउस से प्राप्त किया जा सकता है. फंड हाउस की वेबसाइट से भी इसे डाउनलोड करने का विकल्प है. इसमें एक ऑटो डेबिट एनएसीएच मैनडेट को भी भरना पड़ता है. इसके अलावा केवाईसी दस्तावेजों के साथ कैंसल किए हुए चेक की प्रति को लगाने की जरूरत पड़ती है. इन केवाईसी दस्तावेजों में पते और पहचान का प्रमाण शामिल है. ये दस्तावेज इनवेस्टर सर्विस सेंटर या एएमसी के ब्रांच ऑफिस में जमा किए जा सकते हैं.

ऑनलाइन तरीका

ऑनलाइन तरीके से भी सिप शुरू किया जा सकता है.

फंड हाउस की वेबसाइट: अपना निजी ब्योरा, सिप और बैंक का विवरण दर्ज करके फंड हाउस की वेबसाइट से आई-सिप सुविधा का इस्तेमाल करके सिप शुरू किया जा सकता है. डिटेल्स भरने पर एक यूआरएन जेनरेट होगा. इसके बाद निवेशक को अपने बैंक खाते में लॉग-इन करने की जरूरत पड़ेगी. फिर वे 'बिलर' के तौर पर म्यूचुअल फंड को जोड़ सकते हैं. सिप इंस्ट्रक्शन को इनेबल करने के लिए यूआरएन की जरूरत होगी.

डिस्ट्रीब्यूटर पोर्टल : म्यूचुअल फंडों के ऑनलाइन ट्रांजेक्शन के लिए कॉर्पोरेट डिस्ट्रीब्यूटर या बैंक जैसे म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर पोर्टल उपलब्ध कराते हैं. इन पोर्टल के जरिये आसानी से सिप शुरू किया जा सकता है. अगर पोर्टल पर ऑटो डेबिट के लिए बैंक मैनडेट पहले से रजिस्टर है तो इसका इस्तेमाल सिप के लिए भी हो सकता है

म्यूचुअल फंड ट्रांजेक्शन पोर्टल : म्यूचुअल फंड के लिए कई तरह के ट्रांजेक्शन पोर्टल हैं. इनमें फड हाउस के रजिस्ट्रार या एमएफयू (म्यूचुअल फंड यूटिलिटी) प्लेटफॉर्म की ओर से उपलब्ध कराए जाने वाले पोर्टल शामिल हैं. इन प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करके भी सिप शुरू किया जा सकता है|

मोबाइल एप्लीकेशन : मोबाइल एप्लीकेशन के द्वारा भी आप अपना म्युचुअल फंड अकाउंट ओपन कर सकते हैं इन्हें ओपन करने के लिए आपको अपना आधार कार्ड, पैन कार्ड एवं अपना एक फोटो भी अपीलों करना पड़ता है अपलोड होने के बाद आपका अकाउंट उस एप्लीकेशन में खुल जाता है उस एप्लीकेशन के द्वारा आप अपना पसंदीदा म्युचुअल फंड खरीद सकते हैं और आप उस एप्लीकेशन के द्वारा एसआईपी भी शुरू कर सकते हैं मोबाइल एप्लीकेशन के द्वारा अपना म्युचुअल फंड में जैसे कि इक्विटी म्युचुअल फंड, डेट म्युचुअल फंड आदि निवेश कर सकते हैं अगर आप चाहते हैं कि आपका एसआईपी का अकाउंट हर महीने ऑटोमेटिक डिटेक्ट हो जाए तो वह सुविधा भी उन एप्लीकेशन पर मिलती है म्यूचुअल फंड में निवेश करने की पॉपुलर मोबाइल एप्लीकेशन इस प्रकार है- ग्रो एप(Groww), जीरोधा कॉइन(Zerodha Coin) ईटी मनी(ETMONEY) आदि सिप इंस्ट्रक्शन के साथ निवेशक एकमुश्त निवेश भी कर सकते हैं. -सिप इंस्ट्रक्शन में कोई बदलाव करने पर दोबारा सिप को शुरू करना पड़ता है. इसके लिए पूरी प्रक्रिया को दोबारा करने की जरूरत पड़ सकती है|

सिस्टेमैटिक ट्रांसफर प्लान(STP)

सिस्टेमैटिक ट्रांसफर प्लान(STP) को संक्षेप में एसटीपी कहा जाता है. यह आपको एक निश्चित अवधि में धीरे-धीरे निवेश करने की सुविधा देता है. इससे रिस्क और रिटर्न के बीच संतुलन बना रहता है. उतार-चढ़ाव वाले बाजार में इक्विटी फंड्स में निवेश के लिए यह तरीका सही है. एसटीपी के तहत फंड हाउस निवेशक को एक स्कीम में एकमुश्त रकम निवेश करने और दूसरी स्कीम में नियमित रूप से पूर्व-निर्धारित रकम ट्रांसफर करने की इजाजत देता है. जिस स्कीम में एकमुश्त रकम का निवेश किया

जाता है, उसे "सोर्स स्कीम" या "ट्रांसफर स्कीम" कहा जाता है. जिस स्कीम में पैसा ट्रांसफर किया जाता है, उसे "डेस्टिनेशन स्कीम" या "टार्गेट स्कीम" कहा जाता है. ज्यादातर मामलों में निवेशक एकमुश्त रकम का निवेशक लिक्विड या अल्ट्रा शॉर्ट फंड में करते हैं और इसे इक्विटी या बैलेंस्ट फंड में ट्रांसफर करते हैं. अगर आप एसटीपी के जरिए इक्विटी फंड में एक लाख रुपये का निवेश करना चाहते हैं तो पहले आपको लिक्विड या अल्ट्रा शॉर्ट टर्म फंड चुनना होगा. इसके बाद आपको यह फैसला करना होगा कि कितना पैसा और कब-कब इक्विटी स्कीम में ट्रांसफर करना है. ज्यादातर फंड हाउस रोजाना, हर हफ्ते, हर महीने, तिमाही आधार पर पैसे ट्रांसफर करने की सुविधा देते हैं. उदाहरण के लिए आप हर महीने की पहली तारीख को 10,000 रुपये इक्विटी फंड में ट्रांसफर करने का फैसला कर सकते हैं. इसके लिए आप 10 महीने की अवधि तय कर सकते हैं. तो हर हफ्ते 2,500 रुपये का भी निवेश कर सकते हैं. अगर आप यह निवेश ऑनलाइन नहीं करना चाहते हैं तो आपको एक ही फंड हाउस के डेट फंड से इक्विटी फंड में पैसा ट्रांसफर करना होगा. कुछ ऑनलाइन पोर्टल आपको एक फंड हाउस की डेट स्कीम से पैसा दूसरे फंड हाउस की इक्विटी स्कीम में ट्रांसफर करने की सुविधा देते हैं. एसटीपी में पैसा लिक्विड या अल्ट्रा शॉर्ट टर्म फंड में तब तक पड़ा रहता है, जब तक वह इक्विटी फंड में ट्रांसफर नहीं हो जाता. इस पैसे पर आपको रिटर्न मिलता है, जो आम तौर पर सेविंग्स बैंक अकाउंट के मुकाबले ज्यादा होता है. एसटीपी से निवेश की लागत औसत रहती है. इसे एवरेजिंग बेनेफिट भी कहते हैं. इसमें ज्यादा एनएवी पर कम यूनिट और कम एनएवी पर ज्यादा यूनिट्स खरीदी जाती है|

◆ ◆ ◆